MAA OMWATI DEGREE COLLEGE HASSANPUR

NOTES

SUBECT- FOREIGN POLICY OF INDIA

CLASS- M.A.4TH SEM

UNIT-1

भारत की विदेश नीति में आर्थिक कारक (Economic Factors in India's Foreign Policy)

भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण पहलू आर्थिक कारक हैं, जो न केवल देश की विकास प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की स्थिति को भी आकार देते हैं। आर्थिक शक्ति, व्यापारिक संबंध, निवेश, और वैश्विक आर्थिक संस्थाओं के साथ भारत के संबंध उसकी विदेश नीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारत की विदेश नीति में आर्थिक कारकों का प्रभाव निम्नलिखित पहलुओं में देखा जा सकता है:

---

1. **आर्थिक विकास और व्यापारिक संबंध (Economic Growth and Trade Relations)**

* **व्यापार और निवेश**: भारत की विदेश नीति में व्यापारिक संबंधों का बहुत बड़ा स्थान है। भारत ने अपनी विदेश नीति में व्यापार को प्रोत्साहन देने के लिए कई द्विपक्षीय और बहुपक्षीय व्यापार समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। जैसे

भारत-ASEAN व्यापार समझौता, **भारत-यूएस व्यापार संबंध** और **भारत-यूरोपीय संघ (EU)** के साथ व्यापारिक समझौते। ये सभी व्यापारिक संबंध भारत के आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में मदद करते हैं।

* **निवेश आकर्षण**: भारत विदेशों से निवेश आकर्षित करने के लिए अपनी विदेश नीति का उपयोग करता है। यह निवेश देश के बुनियादी ढांचे, तकनीकी क्षेत्र और अन्य क्षेत्रों में आर्थिक वृद्धि में सहायक होता है। जैसे, **Make in India** और **Startup India** जैसी पहलें विदेशी निवेशकों को आकर्षित करने के लिए बनाई गईं।

---

2. **अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्थाओं में सक्रिय भागीदारी (Active Participation in International Economic Institutions)**

* **IMF, World Bank, और WTO**: भारत ने अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्थाओं जैसे IMF (अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष), **विश्व बैंक**, और **विश्व व्यापार संगठन (WTO)** में अपनी सक्रिय भागीदारी बढ़ाई है। इन संस्थाओं के माध्यम से भारत ने वैश्विक आर्थिक नीति में अपनी आवाज को उठाया है और अपने आर्थिक हितों को बढ़ावा दिया है।

* **BRICS और G20**: भारत **BRICS (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, और दक्षिण अफ्रीका)** और **G20** जैसे समूहों का सदस्य है, जहां भारत वैश्विक आर्थिक नीति पर प्रभाव डालने के साथ-साथ विकासशील देशों के आर्थिक हितों की रक्षा करने का प्रयास करता है।

---

3. **ऊर्जा सुरक्षा (Energy Security)**

भारत की ऊर्जा सुरक्षा विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत की बढ़ती ऊर्जा मांग को पूरा करने के लिए विदेश नीति में कई देशों के साथ ऊर्जा समझौते किए गए हैं। विशेष रूप से **मध्य पूर्व** और **दक्षिण-पूर्व एशिया** के देशों के साथ तेल और गैस आपूर्ति पर समझौतों को प्राथमिकता दी गई है।

* **रूस और मध्य-पूर्व के देशों से तेल आपूर्ति**: भारत ने रूस, सऊदी अरब, ईरान और अन्य मध्य-पूर्व देशों के साथ ऊर्जा संबंधों को मजबूत किया है। यह संबंध भारत की ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक विकास में सहायक होते हैं।

* **नवीकरणीय ऊर्जा**: भारत ने **ग्लोबल सोलर एलायंस** जैसी पहलें शुरू की हैं, ताकि दुनिया भर में सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा का प्रचार किया जा सके,

जिससे भारत की ऊर्जा आवश्यकता को पूरा किया जा सके और पर्यावरणीय प्रभाव को कम किया जा सके।

---

4. **अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय संबंध और आर्थिक सहयोग (Bilateral Relations and Economic Cooperation with Other Countries)**

भारत की विदेश नीति में द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। भारत ने कई देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते किए हैं, जैसे:

* **भारत-अमेरिका संबंध**: अमेरिका के साथ भारत का रणनीतिक और आर्थिक सहयोग बढ़ा है। दोनों देशों के बीच व्यापार, निवेश, और तकनीकी सहयोग बढ़ा है। भारत को अमेरिका से रक्षा और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भी मदद मिल रही है।

* **भारत-चीन संबंध**: चीन के साथ भारत के व्यापार संबंध बहुत महत्वपूर्ण हैं, हालांकि कुछ क्षेत्रों में विवाद भी हैं, फिर भी दोनों देशों के बीच व्यापारिक संबंध मजबूत हैं। चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापार साझेदार है।

* **भारत-जापान संबंध**: जापान के साथ भारत के आर्थिक संबंधों में वृद्धि हुई है, खासकर बुनियादी ढांचे और निवेश के क्षेत्र में। जापान ने भारत में कई बड़े निवेश किए हैं, जैसे **बुलेट ट्रेन परियोजना**।

---

5. **समाजकल्याण और विकासात्मक सहयोग (Social Welfare and Developmental Cooperation)**

भारत की विदेश नीति में विकासात्मक सहायता को भी शामिल किया गया है, खासकर पड़ोसी देशों में। भारत ने अपने पड़ोसियों जैसे **नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश** आदि को आर्थिक सहायता दी है। यह सहायता विभिन्न क्षेत्रों में होती है, जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, और बुनियादी ढांचे के निर्माण में सहयोग।

* **पड़ोसी देशों के साथ सहयोग**: भारत ने अपने पड़ोसी देशों में जल, स्वास्थ्य, ऊर्जा, और कृषि के क्षेत्रों में सहायता प्रदान की है। यह आर्थिक सहायता भारत के पड़ोसियों के साथ रिश्तों को मजबूत करने में सहायक रही है।

---

6. **भारत की आंतरिक आर्थिक ताकत (India’s Internal Economic Strength)**

भारत की विदेश नीति में आंतरिक आर्थिक ताकत का भी बहुत बड़ा प्रभाव है। जब भारत की अर्थव्यवस्था बढ़ती है, तो वह अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी मजबूत स्थिति में होता है। भारत की बढ़ती **मध्यवर्गीय आबादी**, **तकनीकी विकास**, और **व्यापारिक नेटवर्क** विदेश नीति को प्रभावित करते हैं।

* **आर्थिक सुधार**: भारत की आंतरिक आर्थिक सुधार योजनाओं, जैसे **GST (Goods and Services Tax)** और **रोज़गार सुधार** आदि, ने भारत को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में और अधिक प्रतिस्पर्धात्मक बना दिया है।

निष्कर्ष (Conclusion)

भारत की विदेश नीति में आर्थिक कारक का प्रभाव बहुत गहरा है। आर्थिक विकास, अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक संबंध, ऊर्जा सुरक्षा, और विकासात्मक सहयोग जैसे कारक भारत की विदेश नीति के प्रमुख स्तंभ हैं। वैश्विक आर्थिक मंच पर भारत की भूमिका को मजबूती प्रदान करने के लिए यह कारक लगातार महत्वपूर्ण बने रहेंगे।

विदेशी सहायता और व्यापार की राजनीति (Politics of Foreign Aid and Trade)

विदेशी सहायता और व्यापार, किसी भी देश की विदेश नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। यह केवल आर्थिक सहायता या व्यापारिक लेन-देन तक सीमित नहीं रहते, बल्कि इनकी राजनीति भी अंतर्राष्ट्रीय संबंधों, शक्तियों के संतुलन और वैश्विक रणनीतियों से गहरे जुड़ी होती है। देशों के बीच विदेशी सहायता और व्यापार की राजनीति में न केवल आर्थिक बल्कि राजनीतिक और सामरिक हित भी काम करते हैं।

भारत सहित अन्य देशों ने विदेशी सहायता और व्यापार के माध्यम से अपनी रणनीतिक स्थिति मजबूत करने, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में प्रभाव बढ़ाने और घरेलू विकास को प्रोत्साहित करने के लिए इन उपकरणों का उपयोग किया है। चलिए, इस पर विस्तार से चर्चा करते हैं।

विदेशी सहायता की राजनीति (Politics of Foreign Aid)

विदेशी सहायता का मतलब है, किसी देश द्वारा दूसरे देश को आर्थिक, मानवीय या तकनीकी सहायता देना। यह सहायता कई रूपों में हो सकती है जैसे – **ऋण

(Loans)**, **अनुदान (Grants)**, **मूल्य वर्धन और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण (Technology Transfer)**। देशों के बीच यह सहायता एक तरह से राजनीतिक और सामरिक रणनीति का हिस्सा बन जाती है।

विदेशी सहायता की राजनीति के प्रमुख पहलू:

1. **राजनीतिक और सामरिक उद्देश्य**:

   विदेशी सहायता को अक्सर **राजनीतिक प्रभाव** बढ़ाने के रूप में देखा जाता है। जब कोई विकसित देश जैसे **अमेरिका, चीन** या **रूस** किसी विकासशील देश को सहायता प्रदान करते हैं, तो इसका उद्देश्य केवल मानवीय मदद करना नहीं होता, बल्कि उस देश पर अपनी **राजनीतिक और सामरिक** पकड़ बनाना होता है।

   * उदाहरण के तौर पर, **अमेरिका** का दक्षिण एशिया और मध्य-पूर्व के देशों को दी गई विदेशी सहायता का एक उद्देश्य वहाँ के **सैन्य गठबंधन** को मजबूत करना था।

   * **चीन** ने **बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)** के तहत कई देशों को भारी निवेश और ऋण दिया है, जिससे वह इन देशों पर **आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव** बढ़ा सके।

2. **सहायता देने और प्राप्त करने वाले देशों के हित**:

* **सहायता देने वाला देश** इसे **सार्वजनिक कूटनीति (Public Diplomacy)** के रूप में इस्तेमाल करता है ताकि अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी छवि को बेहतर बनाया जा सके।

* **सहायता प्राप्त करने वाला देश** इसका उपयोग अपने **आर्थिक और सामाजिक विकास** के लिए करता है, लेकिन साथ ही उसे यह भी देखना पड़ता है कि सहायता देने वाले देशों से जुड़ी **राजनीतिक शर्तें** क्या हैं।

3. **मांग और आपूर्ति का प्रभाव**:

विदेशों से प्राप्त सहायता अक्सर **शर्तों** पर निर्भर होती है। इन शर्तों में **आर्थिक सुधार**, **नीति में बदलाव**, और कभी-कभी **राजनीतिक प्रतिबद्धताएँ** भी शामिल होती हैं। उदाहरण के लिए, **IMF** और **विश्व बैंक** जैसी संस्थाएँ, विकासशील देशों को वित्तीय सहायता देती हैं, लेकिन इसके साथ कुछ शर्तें जुड़ी होती हैं, जो देश की आंतरिक नीतियों को प्रभावित करती हैं।

4. **मानवीय और आपदा सहायता**:

प्राकृतिक आपदाओं, जैसे **भूकंप, बाढ़** आदि के बाद विदेशी सहायता का उद्देश्य **आपदा राहत** और **पुनर्निर्माण** होता है। यह भी एक प्रकार की **कूटनीतिक छवि सुधार** का हिस्सा हो सकता है।

व्यापार की राजनीति (Politics of Trade)

व्यापार की राजनीति का मतलब है, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौतों और वाणिज्यिक नीतियों के माध्यम से देशों के राजनीतिक और आर्थिक हितों का संरक्षण। व्यापार केवल वस्तु और सेवाओं का आदान-प्रदान नहीं होता, बल्कि इसके साथ जुड़ी कूटनीति, रणनीतियाँ और वैश्विक शक्ति के खेल भी होते हैं।

व्यापार की राजनीति के प्रमुख पहलू:

1. **व्यापारिक समझौते और कूटनीति**:

   देशों के बीच व्यापारिक समझौते एक अन्य देश के साथ **सामरिक संबंधों** को स्थापित करने का तरीका हो सकते हैं। **भारत-अमेरिका** और **भारत-चीन** के बीच व्यापारिक संबंधों को देखें, तो इनका उद्देश्य न केवल आर्थिक लाभ है, बल्कि सामरिक और कूटनीतिक लाभ भी है।

   * **ग्लोबल ट्रेड ऑर्गनाइजेशन (WTO)** के तहत कई देशों के बीच **विकसित और विकासशील देशों** के बीच व्यापारिक शर्तों पर बातचीत होती है।

   * **अमेरिका और यूरोपीय संघ** ने अपने व्यापारिक समझौतों में यह शर्तें लगाईं कि किसी विकासशील देश को अगर वे व्यापार में हिस्सा देंगे, तो उस देश को अपनी आंतरिक नीतियों में कुछ बदलाव करने होंगे।

2. **प्रोटेक्शनिज़्म और मुक्त व्यापार (Protectionism and Free Trade)**:

   कुछ देशों में व्यापार को नियंत्रित करने के लिए **प्रोटेक्शनिज़्म** की नीति अपनाई जाती है। इसका मतलब है कि देश अपनी घरेलू उद्योगों की रक्षा करने के लिए **आयात पर शुल्क** और **कर** बढ़ाते हैं।

   * उदाहरण के तौर पर, **अमेरिका** और **चीन** के बीच ट्रेड वार ने वैश्विक व्यापार की राजनीति को प्रभावित किया। दोनों देशों ने एक-दूसरे पर **टैरिफ (Tariffs)** और **प्रतिबंध** लागू किए, जिससे वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएँ प्रभावित हुईं।

3. **चीन की व्यापारिक रणनीति (China’s Trade Strategy)**:

चीन ने **"बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)"** के तहत विभिन्न देशों को निवेश और व्यापारिक समझौते प्रस्तावित किए हैं। इस तरह, चीन ने **वैश्विक आर्थिक राजनीति** में अपनी स्थिति मजबूत की है। इसके जरिए वह वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं और व्यापारिक मार्गों को नियंत्रित करने की कोशिश कर रहा है।

4. **आर्थिक सहयोग और व्यापारिक संगठन**:

ASEAN, SAARC, MERCOSUR, EU जैसे क्षेत्रीय व्यापारिक संगठनों का उद्देश्य देशों के बीच आर्थिक सहयोग बढ़ाना और व्यापार को सरल बनाना है। इन संगठनों में शामिल देशों के लिए सामूहिक हितों को सुरक्षित करना महत्वपूर्ण होता है।

5. **संसाधन और व्यापार (Resources and Trade)**:

प्राकृतिक संसाधन जैसे तेल, गैस, खनिज आदि के व्यापार में भी एक गहरी राजनीतिक प्रक्रिया जुड़ी होती है। जैसे **मध्य पूर्व** में तेल का व्यापार वैश्विक शक्ति संबंधों को प्रभावित करता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

विदेशी सहायता और व्यापार की राजनीति का सीधा संबंध **अंतर्राष्ट्रीय संबंधों, शक्तियों के संतुलन और वैश्विक रणनीतियों** से है। देशों के बीच आर्थिक सहायता और व्यापारिक समझौतों में केवल आर्थिक या व्यापारिक लाभ ही नहीं, बल्कि सामरिक और राजनीतिक रणनीतियाँ भी छिपी होती हैं। इसलिए, विदेशी सहायता और व्यापार के मामलों में देशों के **राजनीतिक हित** और **कूटनीतिक संबंध** हमेशा निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

बहुराष्ट्रीय संस्थाओं और निगमों की भूमिका (Role of Multinational Institutions and Corporations)

बहुराष्ट्रीय संस्थाएँ (Multinational Institutions) और **बहुराष्ट्रीय निगम (Multinational Corporations - MNCs)** वैश्विक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये संस्थाएँ और निगम वैश्विक व्यापार, विकास, निवेश, और आर्थिक नीति पर गहरा प्रभाव डालते हैं। इनका प्रभाव केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि ये **राजनीतिक**, **सामाजिक**, और **पर्यावरणीय** पहलुओं को भी प्रभावित करते हैं।

आइए, हम विस्तार से देखें कि इन संस्थाओं और निगमों की भूमिका कैसी है:

---

1. बहुराष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका (Role of Multinational Institutions)

बहुराष्ट्रीय संस्थाएँ **ग्लोबल फाइनेंस**, **विकास**, **अर्थव्यवस्था**, और **राजनीति** के लिए आवश्यक संस्थाएँ हैं। कुछ प्रमुख बहुराष्ट्रीय संस्थाएँ **विश्व बैंक (World Bank)**, **अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)**, **विश्व व्यापार संगठन (WTO)**, और **संयुक्त राष्ट्र (UN)** हैं। ये संस्थाएँ देशों के बीच आर्थिक सहयोग, स्थिरता, और नीति निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

विश्व बैंक (World Bank) और IMF की भूमिका:

* **विकास सहायता**: विश्व बैंक और IMF विकासशील देशों को ऋण और वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं, ताकि वे अपने बुनियादी ढांचे को मजबूत कर सकें और सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकें। उदाहरण के लिए, **भारत** को बुनियादी ढांचे और गरीबी उन्मूलन के लिए कई बार विश्व बैंक से वित्तीय सहायता मिली है।

* **आर्थिक नीति मार्गदर्शन**: IMF देशों को वैश्विक आर्थिक नीति के संदर्भ में मार्गदर्शन करता है और उन्हें **आर्थिक सुधार**, **मूल्य वृद्धि नियंत्रण**, और **विनिमय दर स्थिरता** जैसी नीतियाँ अपनाने की सलाह देता है।

विश्व व्यापार संगठन (WTO):

* WTO का मुख्य उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को सुव्यवस्थित करना और मुक्त व्यापार को बढ़ावा देना है। यह व्यापार विवादों का समाधान करता है और देशों के बीच व्यापारिक बाधाओं को हटाने के लिए नियम बनाता है। WTO का प्रभाव विशेष रूप से **विकसित और विकासशील देशों के बीच व्यापारिक असमानता** को सुधारने पर पड़ा है।

संयुक्त राष्ट्र (UN):

* UN, **विकास, मानवाधिकार**, और **वैश्विक शांति** को बढ़ावा देने के लिए काम करता है। UN की एजेंसियाँ जैसे **UNDP (United Nations Development Programme)** देशों में विकास परियोजनाओं का संचालन करती हैं और वैश्विक संकटों पर प्रतिक्रिया देती हैं।

---

2. बहुराष्ट्रीय निगमों (MNCs) की भूमिका (Role of Multinational Corporations)

बहुराष्ट्रीय निगम (MNCs) वे कंपनियाँ हैं जो एक से अधिक देशों में व्यापार करती हैं और अपनी उत्पादन गतिविधियाँ विभिन्न देशों में फैलाती हैं। जैसे, **Apple, Microsoft, Samsung, Coca-Cola**, आदि। MNCs वैश्विक अर्थव्यवस्था में कई तरह से योगदान करते हैं और कई मामलों में इनकी शक्ति सरकारों से भी अधिक होती है।

आर्थिक विकास और रोजगार:

* **निवेश और पूंजी प्रवाह**: MNCs ने वैश्विक स्तर पर **निवेश** को बढ़ावा दिया है। वे देशों में **नौकरियाँ**, **प्रौद्योगिकी**, और **नई प्रोडक्शन टेक्नोलॉजी** लाते हैं, जिससे देश की अर्थव्यवस्था में सुधार होता है।

  उदाहरण के तौर पर, **इन्फोसिस** और **टाटा** जैसी कंपनियाँ भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक प्रमुख **निर्यातक** हैं और **नौकरी निर्माण** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। **Apple** और **Microsoft** जैसी कंपनियाँ दुनिया भर में **सॉफ़्टवेयर और हार्डवेयर उद्योग** को मजबूत करती हैं।

तकनीकी नवाचार (Technological Innovation):

* MNCs द्वारा किए गए **नवीनतम तकनीकी विकास** और **नवाचार** का प्रभाव वैश्विक उत्पादन और सेवाओं के स्तर पर दिखता है। जैसे

Google, **Microsoft**, और **Tesla** जैसी कंपनियाँ वैश्विक स्तर पर **प्रौद्योगिकी** के क्षेत्र में क्रांति ला रही हैं। वे देशों के उत्पादकता स्तर को बढ़ाती हैं और कई बार स्थानीय उद्योगों को उच्च मानकों पर काम करने के लिए प्रेरित करती हैं।

ग्लोबल सप्लाई चेन (Global Supply Chain):

* MNCs की आपूर्ति श्रृंखलाएँ वैश्विक स्तर पर फैली हुई होती हैं। वे विभिन्न देशों से कच्चे माल की आपूर्ति प्राप्त करती हैं और विभिन्न देशों में उत्पादन करती हैं। इसका फायदा यह होता है कि ये कंपनियाँ वैश्विक अर्थव्यवस्था में एकीकृत होती हैं, जिससे विकासशील देशों को अपने उत्पादों के लिए वैश्विक बाजारों तक पहुंच मिलती है।

निर्यात और वैश्विक बाजार में प्रवेश:

* MNCs के कारण कई देशों के उत्पाद वैश्विक स्तर पर निर्यात होते हैं, और इससे **विदेशी मुद्रा आय** में वृद्धि होती है। उदाहरण के लिए, **भारत की सूचना प्रौद्योगिकी (IT) कंपनियाँ** जैसे **Wipro**, **TCS**, और **Infosys** ने दुनिया भर में सेवाएँ प्रदान की हैं, जो भारत की **विदेशी मुद्रा** को बढ़ाती हैं।

सामाजिक जिम्मेदारी और पर्यावरणीय प्रभाव (CSR and Environmental Impact):

* MNCs को अक्सर **कॉर्पोरेट सोशल रेस्पॉन्सिबिलिटी (CSR)** का पालन करने के लिए प्रेरित किया जाता है। कई कंपनियाँ **शैक्षिक**, **स्वास्थ्य**, और **सामाजिक कल्याण** के लिए योगदान देती हैं। हालांकि, MNCs की गतिविधियाँ पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव भी डाल सकती हैं, जैसे **प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन** और **प्रदूषण**। उदाहरण के लिए, **कोका-कोला** और **नाइकी** जैसी कंपनियाँ कई देशों में **पानी की कमी** और **श्रमिक शोषण** के आरोपों का सामना कर चुकी हैं।

---

3. वैश्विक राजनीति में प्रभाव (Impact on Global Politics)

शक्ति संतुलन (Power Balance):

* MNCs और बहुराष्ट्रीय संस्थाएँ वैश्विक राजनीति को प्रभावित करती हैं। इन कंपनियों की **आर्थिक ताकत** इतनी बड़ी होती है कि वे कई देशों की नीतियों पर प्रभाव डाल सकती हैं। **अमेरिका, यूरोप** और **चीन** जैसी वैश्विक

शक्तियाँ इन निगमों का समर्थन करती हैं, जो उन्हें वैश्विक आर्थिक और राजनीतिक ताकत बनाती हैं।

सामरिक और कूटनीतिक हित (Strategic and Diplomatic Interests):

* MNCs और बहुराष्ट्रीय संस्थाएँ देशों के **सामरिक और कूटनीतिक रिश्तों** को प्रभावित कर सकती हैं। **चीन** की **Belt and Road Initiative** (BRI) में कई बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ निवेश करती हैं, जिससे **चीन** का वैश्विक प्रभाव बढ़ता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

बहुराष्ट्रीय संस्थाएँ और **निगम** वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक अहम हिस्सा हैं। इनकी भूमिका केवल आर्थिक विकास और व्यापार तक सीमित नहीं है, बल्कि ये **राजनीतिक**, **सामाजिक**, और **पर्यावरणीय** प्रभाव भी डालती हैं। इनका प्रभाव वैश्विक शक्ति के संतुलन, देशों के घरेलू मामलों, और वैश्विक शांति पर भी गहरा पड़ता है।

इन संस्थाओं और निगमों की भूमिका पर निरंतर निगरानी और सही नीति निर्माण जरूरी है, ताकि वे सकारात्मक तरीके से वैश्विक विकास में योगदान कर सकें।

UNIT-2

भारत की आर्थिक नीति (India's Economic Policy)

भारत की आर्थिक नीति समय-समय पर बदलती रही है, और यह देश की आंतरिक और बाहरी परिस्थितियों के आधार पर विकसित होती रही है। भारतीय सरकार ने अपने **स्वतंत्रता प्राप्ति** के बाद से विभिन्न आर्थिक नीतियाँ अपनाई हैं, जिनका उद्देश्य आर्थिक विकास, समृद्धि, और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देना है।

भारत की आर्थिक नीति के विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए हम इसे प्रमुख **इतिहासिक विकास**, **सामाजिक और राजनीतिक** संदर्भ में और **आधुनिक नीतियों** के तहत विभाजित कर सकते हैं।

---

1. प्रारंभिक आर्थिक नीति (Post-Independence Economic Policy)

स्वतंत्रता के बाद (1947-1991) भारत की आर्थिक नीति में एक **स्वावलंबी और योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था** को प्रोत्साहित करने की कोशिश की गई। इस दौरान **नेहरूवादी आर्थिक नीति** का दबदबा था, जिसमें प्रमुख बिंदु थे:

नेहरूवादी अर्थव्यवस्था (Nehruvian Economy):

* **प्लान्ड इकोनॉमी (Planned Economy)**: भारत में पहली बार **पंचवर्षीय योजनाओं (Five-Year Plans)** की शुरुआत की गई थी। यह योजना एक केंद्रीकृत योजना के रूप में थी, जिसमें सरकार की प्रमुख भूमिका थी।
* **औद्योगिकीकरण (Industrialization)**: देश की प्रमुख प्राथमिकता **विकसित उद्योगों** की स्थापना थी, जैसे **Heavy Industries, Steel Plants**, आदि।
* **सार्वजनिक क्षेत्र का वर्चस्व (Public Sector Dominance)**: सार्वजनिक क्षेत्र (PSUs) को प्रमुख उद्योगों में प्रमुख स्थान दिया गया था, जैसे **BHEL**, **Steel Authority of India (SAIL)**, और **ONGC**।
* **निगमित व्यापार और आयात-निर्यात नियंत्रण (Regulated Trade and Import-Export Control)**: विदेशी व्यापार पर भारी नियंत्रण था, और **इम्पोर्ट सब्सटीट्यूशन** नीति अपनाई गई थी, जिससे भारतीय उद्योगों को बढ़ावा दिया जा सके।

---

2. 1991 के बाद आर्थिक सुधार (Economic Reforms Post-1991)

भारत में 1991 में एक ऐतिहासिक आर्थिक संकट आया, जिसके कारण सरकार ने आर्थिक सुधारों का रास्ता अपनाया। यह सुधार "लिबरलाइजेशन", "प्राइवेटाइजेशन" और "वैश्वीकरण" के तहत थे। इन सुधारों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक स्तर पर एक नया मोड़ दिया।

मुख्य सुधार:

* **लिबरलाइजेशन (Liberalization)**: भारत ने **आर्थिक उदारीकरण (Economic Liberalization)** की दिशा में कई कदम उठाए। इसमें आयात नियंत्रण में ढील, विनिमय दर में परिवर्तन, और विदेशी निवेश को बढ़ावा देने की नीति शामिल थी।

* **निजीकरण (Privatization)**: सार्वजनिक क्षेत्र के कई उद्योगों को निजी क्षेत्र में स्थानांतरित किया गया। इससे **वित्तीय घाटा** कम हुआ और **नवीनतम तकनीक** का उपयोग हुआ।

* **वैश्वीकरण (Globalization)**: भारत ने वैश्विक बाजारों में अपनी उपस्थिति को मजबूत किया। विदेशी व्यापार को बढ़ावा देने के लिए **डब्ल्यूटीओ (WTO)** और **GATT** के नियमों के तहत कदम उठाए गए। इसके परिणामस्वरूप **भारत में विदेशी निवेश** और व्यापार में वृद्धि हुई।

* **विदेशी निवेश (Foreign Direct Investment - FDI)**: भारत ने विदेशी निवेश आकर्षित करने के लिए नीतियाँ बनाई, जिससे वैश्विक कंपनियों का भारत में प्रवेश हुआ और देश में निवेश और रोजगार का स्तर बढ़ा।

---

3. आर्थिक नीति के प्रमुख उद्देश्य (Objectives of India's Economic Policy)

भारत की आर्थिक नीति का प्रमुख उद्देश्य **सामाजिक और आर्थिक समानता** की ओर बढ़ना है। निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य हैं:

* **आर्थिक विकास (Economic Growth)**: भारत का मुख्य लक्ष्य **GDP विकास** को बढ़ाना है, ताकि देश की समृद्धि बढ़े और बेरोज़गारी कम हो।

* **विपरीत परिस्थितियों में संतुलन (Balance in Adverse Conditions)**: जैसे **संघर्षों, प्राकृतिक आपदाओं** आदि से प्रभावित क्षेत्रों में तत्काल राहत देना और पुनर्निर्माण करना।

* **गरीबी उन्मूलन (Poverty Eradication)**: गरीबी और बेरोज़गारी की समस्या को दूर करना। इसके लिए सरकार ने **महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (MGNREGA)** जैसी योजनाएं शुरू की।

* **संरचनात्मक सुधार (Structural Reforms)**: सरकार ने **शेयर बाजार, वित्तीय बाजार** और **कृषि क्षेत्र** में सुधार किए हैं ताकि उनकी कार्यकुशलता और उत्पादकता बढ़ सके।

---

4. वर्तमान आर्थिक नीति (Current Economic Policy)

आज की भारतीय आर्थिक नीति में **आधुनिक दृष्टिकोण** और **बाजार-आधारित अर्थव्यवस्था** की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति है। इसके तहत कई योजनाओं और नीतियों को लागू किया गया है:

मुख्य योजनाएँ:

* **Make in India**: इस योजना का उद्देश्य **भारत को मैन्युफैक्चरिंग हब** बनाना है, ताकि **औद्योगिकीकरण** को बढ़ावा मिले और रोजगार के अवसर बढ़ें।

* **Startup India**: इस पहल का उद्देश्य **स्टार्टअप्स** को प्रोत्साहन देना है, ताकि **नवाचार (Innovation)** और **व्यवसायिक वातावरण** को सुधारने के साथ-साथ **रोजगार** के अवसर बढ़े।

* **Digital India**: इसका लक्ष्य देश में **डिजिटल अवसंरचना** का विकास करना है, ताकि **तकनीकी क्षेत्र** में भारत को आगे बढ़ाया जा सके और हर नागरिक को **डिजिटल सेवाएं** उपलब्ध हो सकें।

* **GST (Goods and Services Tax)**: यह **एकीकृत कर प्रणाली** है, जिससे पूरे देश में **वस्तु और सेवा कर** के समान मानक लागू किए गए हैं, जो व्यापार और उद्योग के लिए अधिक पारदर्शिता और आसानी सुनिश्चित करते हैं।

नई नीति की चुनौतियाँ:

* **मूल्य वृद्धि (Inflation)**: भारत को महंगाई के बढ़ते मुद्दे से निपटना है, जिससे आम आदमी की जीवन-यापन की लागत पर असर पड़ता है।

* **बेरोज़गारी (Unemployment)**: बेरोज़गारी को दूर करने के लिए पर्याप्त रोजगार सृजन की आवश्यकता है।

* **कृषि संकट (Agricultural Crisis)**: कृषि क्षेत्र में **सुधार** की आवश्यकता है ताकि किसानों की आय में वृद्धि हो और कृषि संकट से निपटा जा सके।

* **वित्तीय घाटा (Fiscal Deficit)**: भारत को सार्वजनिक वित्तीय घाटे को नियंत्रित करने के उपायों की आवश्यकता है ताकि सरकार के बजट का संतुलन बनाए रखा जा सके।

निष्कर्ष (Conclusion)

भारत की आर्थिक नीति ने समय के साथ महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। **स्वतंत्रता प्राप्ति** के समय से लेकर आज तक, भारत ने विभिन्न रणनीतियाँ अपनाई हैं ताकि वह अपने **आर्थिक और सामाजिक विकास** को गति दे सके। वर्तमान में **आधुनिक तकनीकी**, **नवाचार**, और **वैश्वीकरण** पर आधारित नीतियाँ लागू हो रही हैं, जिससे भारत को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में स्थान बनाने में मदद मिल रही है।

हालांकि, इन नीतियों के प्रभाव और परिणाम हमेशा समान नहीं होते, और भारत को अपनी विकास यात्रा में कई चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है। फिर

भी, **आर्थिक सुधारों** और **संरचनात्मक नीतियों** के माध्यम से भारत अपने आर्थिक भविष्य को सुधारने के लिए लगातार प्रयास कर रहा है।

वैश्वीकरण का प्रभाव (Impact of Globalization)

वैश्वीकरण (Globalization) एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें दुनिया भर के देश एक दूसरे के साथ आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक दृष्टि से जुड़ते हैं। यह प्रक्रिया पिछले कुछ दशकों में तेज़ी से बढ़ी है, विशेष रूप से **तकनीकी प्रगति**, **सूचना का आदान-प्रदान**, और **आधुनिक परिवहन प्रणाली** की वजह से। वैश्वीकरण का प्रभाव बहुत व्यापक है, और इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू हैं।

आइए, वैश्वीकरण के प्रभाव को विभिन्न आयामों में समझते हैं:

---

1. आर्थिक प्रभाव (Economic Impact)

सकारात्मक प्रभाव:

1. **आर्थिक विकास और समृद्धि**:

* वैश्वीकरण ने **विश्वव्यापी व्यापार** को बढ़ावा दिया है। इससे विकासशील देशों को **वैश्विक बाजारों** तक पहुंच मिली है और उन्हें **निवेश** और **तकनीकी सहयोग** प्राप्त हुआ है।
* जैसे **भारत, चीन, और ब्राजील** जैसे देशों ने वैश्वीकरण का लाभ उठाया और इन देशों की अर्थव्यवस्था में तेज़ी से वृद्धि हुई है।

2. **नौकरी के अवसर**:

* वैश्वीकरण ने **नए उद्योगों** और **सेवाओं** के सृजन में मदद की है, जिससे रोजगार के अवसर बढ़े हैं। विशेष रूप से **आईटी** और **संचार उद्योग** में वैश्विक कंपनियों के आने से लाखों नई नौकरियाँ पैदा हुई हैं।
* **भारत** में, **आउटसोर्सिंग** और **बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (BPO)** के बढ़ने से लाखों भारतीयों को रोजगार मिला है।

3. **प्रौद्योगिकी में सुधार**:

* वैश्वीकरण ने **प्रौद्योगिकी का आदान-प्रदान** किया है, जिससे नए तकनीकी उपायों का विकास हुआ है। उदाहरण के तौर पर, **सूचना प्रौद्योगिकी

(IT)** और **ऑटोमेशन** में तेजी से सुधार हुआ है, जिससे उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई है।

4. **विदेशी निवेश (FDI)**:

* वैश्वीकरण ने **विदेशी निवेश** को आकर्षित किया है, जिससे देशों के आर्थिक विकास में मदद मिली है। जैसे **भारत** ने अपनी **FDI नीति** को उदार किया, जिससे बड़ी विदेशी कंपनियाँ भारतीय बाजार में आईं और व्यापार को बढ़ावा मिला।

नकारात्मक प्रभाव:

1. **आर्थिक असमानता**:

* वैश्वीकरण ने **धन और संसाधनों का असमान वितरण** किया है। विकसित देशों और विकासशील देशों के बीच **आर्थिक असमानता** बढ़ी है। जबकि कुछ देशों और व्यक्तियों को इससे फायदा हुआ, वहीं गरीब देशों और श्रमिक वर्ग के लिए इसके नकरात्मक प्रभाव हो सकते हैं।

* **भारत** और अन्य विकासशील देशों में कुछ वर्गों ने **आर्थिक असमानता** को बढ़ते देखा है, क्योंकि कई लोगों को इसका लाभ नहीं मिल पाया है।

2. **स्थानीय उद्योगों पर दबाव**:

* वैश्वीकरण ने स्थानीय उद्योगों के लिए प्रतिस्पर्धा को बढ़ाया है। कई छोटे उद्योगों और **कृषि क्षेत्रों** को वैश्विक बाजारों से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा है, जिससे उनके अस्तित्व को खतरा हो सकता है।

* उदाहरण के तौर पर, **भारत** के छोटे **कृषि उत्पादक** और **हस्तशिल्प उद्योग** को **सस्ती विदेशी वस्तुओं** की अधिकता से नुकसान हुआ है।

---

2. सामाजिक प्रभाव (Social Impact)

सकारात्मक प्रभाव:

1. **सामाजिक जागरूकता**:

* वैश्वीकरण ने दुनिया भर में **सामाजिक मुद्दों** के प्रति जागरूकता बढ़ाई है। जैसे, **मानवाधिकार**, **महिलाओं के अधिकार**, **शिक्षा** और **स्वास्थ्य** पर वैश्विक स्तर पर चर्चा की गई है।

* इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से लोग **सामाजिक आंदोलनों** में भाग लेते हैं और **समान अधिकार** की बात करते हैं, जिससे समाज में बदलाव आ रहा है।

2. **सांस्कृतिक आदान-प्रदान**:

* वैश्वीकरण ने दुनिया भर की संस्कृति, कला, भोजन, संगीत, और फैशन को एक दूसरे से जोड़ने का काम किया है। लोग अब विभिन्न देशों की **संस्कृति** और **जीवनशैली** से अवगत हो सकते हैं, जिससे **सांस्कृतिक समृद्धि** बढ़ी है।

* उदाहरण के तौर पर, भारतीय फिल्म उद्योग **बॉलीवुड** अब **हॉलीवुड** और अन्य अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहा है।

नकारात्मक प्रभाव:

1. **सांस्कृतिक संकुचन (Cultural Erosion)**:

   * वैश्वीकरण के कारण कुछ पारंपरिक और स्थानीय संस्कृतियाँ खतरे में पड़ सकती हैं। **पश्चिमी जीवनशैली** और **खपत संस्कृति** का प्रभाव बढ़ने से कई देशों की पारंपरिक सांस्कृतिक पहचान कमजोर हो सकती है।
   * **भारत** में, उदाहरण के लिए, **पारंपरिक व्यंजन** और **संस्कार** धीरे-धीरे **पश्चिमी संस्कृति** से प्रभावित हो रहे हैं।

2. **सामाजिक असमानता**:

   * वैश्वीकरण ने समाज में **सामाजिक असमानता** को बढ़ाया है। विशेष रूप से गरीब और पिछड़े वर्गों को इसका उतना फायदा नहीं मिला है जितना कि संपन्न वर्ग को मिला है। इससे समाज में **वर्गीय अंतर** और **सामाजिक असंतोष** बढ़ सकता है।

---

3. राजनीतिक प्रभाव (Political Impact)

सकारात्मक प्रभाव:

1. **वैश्विक सहयोग**:

* वैश्वीकरण ने देशों के बीच **वैश्विक सहयोग** को बढ़ावा दिया है। **संयुक्त राष्ट्र (UN)**, **विश्व व्यापार संगठन (WTO)** और अन्य बहुपक्षीय संगठनों के माध्यम से देशों के बीच **राजनीतिक संवाद** और **साझा निर्णय** लेने का अवसर मिला है।
* **भारत** जैसे देशों ने वैश्विक मुद्दों पर **डिप्लोमेसी** का उपयोग किया है और विभिन्न देशों के साथ **राजनीतिक और आर्थिक संबंध** मजबूत किए हैं।

2. **राजनीतिक स्थिरता**:

* वैश्वीकरण के कारण देशों में **अंतरराष्ट्रीय निगरानी** और **सहयोग** बढ़ा है, जिससे **राजनीतिक स्थिरता** को बढ़ावा मिला है। इससे देशों में **लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं** और **गवर्नेंस** में सुधार हो सकता है।

नकारात्मक प्रभाव:

1. **राष्ट्रीय संप्रभुता पर खतरा**:

* वैश्वीकरण के कारण कुछ देशों की **राष्ट्रीय संप्रभुता** पर खतरा हो सकता है। जब देशों के आंतरिक फैसले **वैश्विक कंपनियों** या **संस्थाओं** के दबाव में आते हैं, तो यह उन देशों की **स्वतंत्र निर्णय क्षमता** को प्रभावित कर सकता है।

* उदाहरण के तौर पर, **IMF** और **विश्व बैंक** द्वारा लगाए गए **ऋण शर्तें** और **अर्थव्यवस्था संबंधी नीतियाँ** कई बार देशों की **राजनीतिक स्वतंत्रता** को सीमित कर देती हैं।

2. **वैश्विक असंतोष और संघर्ष**:

* वैश्वीकरण ने विभिन्न देशों में **आर्थिक और राजनीतिक असंतोष** को बढ़ावा दिया है। **विकसित और विकासशील देशों** के बीच असमानताएँ और संघर्ष बढ़ सकते हैं।

* **चीन और अमेरिका** के बीच व्यापार युद्ध और **ब्रेक्जिट (Brexit)** जैसे घटनाएँ वैश्वीकरण के नकारात्मक पहलुओं को दर्शाती हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

वैश्वीकरण ने निश्चित रूप से दुनिया को एक अधिक **जुड़ा हुआ स्थान** बना दिया है, लेकिन इसके प्रभाव जटिल और मिश्रित हैं। यह जहां एक ओर **आर्थिक विकास**, **सामाजिक समृद्धि** और **वैश्विक सहयोग** को बढ़ावा देता है, वहीं दूसरी ओर यह **सांस्कृतिक संकुचन**, **सामाजिक असमानता**, और **राजनीतिक दबाव** भी उत्पन्न कर सकता है।

वैश्वीकरण का सही और सकारात्मक उपयोग करने के लिए देशों को **नियमित नीति संशोधन** और **स्थिर निगरानी** की आवश्यकता है, ताकि इसके लाभों का पूरा लाभ उठाया जा सके और नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सके।

विदेशी नीति के सामने प्रमुख चुनौतियाँ (Major Challenges to Foreign Policy)

विदेशी नीति वह रणनीति और दिशा होती है, जिसे एक देश अपने अंतरराष्ट्रीय संबंधों को प्रभावित करने, अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने और वैश्विक मुद्दों पर निर्णय लेने के लिए अपनाता है। हालांकि, विदेशी नीति को बनाना और लागू करना किसी भी सरकार के लिए एक जटिल कार्य होता है, और इसके सामने कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ होती हैं।

यहाँ कुछ प्रमुख चुनौतियाँ दी जा रही हैं जो किसी भी देश की विदेशी नीति के सामने आ सकती हैं:

---

1. वैश्विक शक्ति संतुलन में बदलाव (Changing Global Power Dynamics)

* **वैश्विक शक्ति के स्थानांतरण**: वैश्विक शक्ति केंद्रों में बदलाव हो रहा है, जैसे **अमेरिका** से **चीन** और **भारत** जैसे देशों की ओर बढ़ता प्रभाव। इस बदलाव के कारण देशों के बीच संबंधों में असंतुलन पैदा हो सकता है और पुरानी शक्तियाँ अपनी स्थिति को बनाए रखने के लिए संघर्ष कर सकती हैं।

* **सामरिक शत्रुताएँ**: शक्तियों के बीच **जियॉपॉलिटिकल** और **सामरिक टकराव** बढ़ रहे हैं, जैसे **अमेरिका और चीन** के बीच व्यापार युद्ध और **भारत और पाकिस्तान** के बीच तनाव। यह रिश्तों को जटिल बना देता है और देशों को अपनी विदेश नीति में संतुलन बनाए रखने की चुनौती मिलती है।

---

2. आतंकवाद और सुरक्षा संकट (Terrorism and Security Threats)

* **आतंकवाद** एक बहुत बड़ी चुनौती है, जो देशों की **विदेशी नीति** को प्रभावित करता है। वैश्विक आतंकवाद और कट्टरपंथी समूहों के फैलने से देशों को अपनी सुरक्षा और कूटनीतिक संबंधों पर पुनः विचार करना पड़ता है।

* **सुरक्षा सहयोग** और **आतंकवाद विरोधी संधियाँ** के संदर्भ में देशों को एक दूसरे के साथ मिलकर काम करना होता है। हालांकि, कुछ देशों के बीच **आतंकवाद को लेकर भिन्न दृष्टिकोण** होते हैं, जो सहयोग में बाधा डाल सकते हैं।

---

3. जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकट (Climate Change and Environmental Crisis)

* **जलवायु परिवर्तन** एक बढ़ता हुआ वैश्विक संकट है, जो सभी देशों के लिए चिंता का कारण है। **विकसित देशों** और **विकासशील देशों** के बीच पर्यावरणीय नीतियों को लेकर असहमति भी हो सकती है। इससे देशों को एक साझा वैश्विक नीति बनाने में कठिनाई हो सकती है।

* **पारिस्थितिकी संतुलन** को बनाए रखने के लिए वैश्विक सहयोग जरूरी है, लेकिन विभिन्न देशों के **आर्थिक विकास** और **पर्यावरणीय प्रतिबद्धताएँ** अक्सर टकराती हैं। उदाहरण के लिए, **पेरिस जलवायु समझौता** में देशों के विभिन्न हित जुड़े हुए हैं, जो कभी-कभी समस्या उत्पन्न करते हैं।

---

4. आर्थिक असमानताएँ और वैश्विक व्यापार संकट (Economic Inequality and Global Trade Tensions)

* **आर्थिक असमानताएँ** और **व्यापारिक संघर्ष** भी विदेशी नीति के सामने बड़ी चुनौती है। **विकसित और विकासशील देशों** के बीच व्यापार, संसाधनों की असमान वितरण, और **टैरिफ (Tariff)** संबंधी विवाद वैश्विक व्यापार नीति को प्रभावित कर सकते हैं।

* **विकासशील देशों** की मांग होती है कि उन्हें **समान व्यापारिक अवसर** मिलें, जबकि विकसित देशों का जोर उनके **आर्थिक हितों की रक्षा** पर होता है। इस असंतुलन को दूर करने के लिए देशों को कूटनीतिक रूप से सहयोग की आवश्यकता होती है।

---

5. मानवाधिकार और अंतरराष्ट्रीय कानूनी मुद्दे (Human Rights and International Legal Issues)

* **मानवाधिकार** और **अंतरराष्ट्रीय कानून** के मुद्दे कई देशों की विदेशी नीति में उत्पन्न हो सकते हैं। जैसे **ह्यूमन राइट्स वॉयलेशंस** (मानवाधिकार उल्लंघन) के कारण कुछ देशों के रिश्ते बिगड़ सकते हैं।

* **संयुक्त राष्ट्र** और अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ इस पर काम करती हैं, लेकिन हर देश अपनी **आंतरिक नीतियों** में हस्तक्षेप को लेकर सहज नहीं होता। उदाहरण के तौर पर, **चीन और तिब्बत** या **म्यांमार में रोहिंग्या मुसलमानों के अधिकार** जैसे मुद्दे देशों के रिश्तों को प्रभावित करते हैं।

---

6. शरणार्थी संकट और प्रवासन (Refugee Crisis and Migration)

* **शरणार्थी संकट** और **प्रवासन** ने कई देशों की विदेश नीति को चुनौती दी है। **सीरिया, अफगानिस्तान**, और **म्यांमार** जैसे देशों से

लाखों लोग अपने घरों से भागकर दूसरे देशों में शरण ले रहे हैं, जिससे उन देशों की **सामाजिक-आर्थिक स्थिति** और **सुरक्षा** पर दबाव बढ़ रहा है।

* देशों के बीच **शरणार्थियों** को लेकर **विभिन्न नीतियाँ** हैं, जिससे वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर **कूटनीतिक संघर्ष** में फंस सकते हैं। **यूरोपीय संघ** और **अमेरिका** जैसे देशों के लिए यह एक बड़ी चुनौती है।

---

7. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में अस्थिरता (Instability in International Relations)

* **दक्षिण एशिया**, **मध्य-पूर्व**, और **पूर्वी यूरोप** जैसे क्षेत्रों में **राजनीतिक अस्थिरता** और **युद्ध** के कारण देशों के बीच रिश्ते तनावपूर्ण हो सकते हैं।

* जैसे, **भारत-पाकिस्तान** संबंधों की अस्थिरता, **मध्य-पूर्व में इराक और सीरिया** की स्थिति, और **यूक्रेन-रूस युद्ध** के कारण कई देशों की विदेश नीति में बदलाव की आवश्यकता पड़ी है।

---

8. नई तकनीकी चुनौतियाँ (Technological Challenges)

* **साइबर सुरक्षा** और **डिजिटल युद्ध** जैसे मुद्दे वर्तमान में महत्वपूर्ण बन गए हैं। वैश्विक कूटनीतिक संदर्भ में **साइबर हमले** और **डेटा सुरक्षा** को लेकर देशों के बीच मतभेद हो सकते हैं।

* उदाहरण के लिए, **चीन और अमेरिका** के बीच **टेक्नोलॉजी** और **डेटा सुरक्षा** के मुद्दे अक्सर तनाव का कारण बनते हैं, जैसे **Huawei** और **TikTok** पर विवाद।

---

9. राष्ट्रीय हितों और अंतर्राष्ट्रीय दबावों का संतुलन (Balancing National Interests and International Pressures)

* हर देश को अपनी **राष्ट्रीय सुरक्षा** और **आर्थिक हितों** को ध्यान में रखते हुए विदेश नीति तैयार करनी होती है। लेकिन, वैश्विक स्तर पर **संस्थागत दबाव** और **अंतर्राष्ट्रीय आलोचना** को भी संभालना पड़ता है।

* जैसे, **भारत** को **परमाणु मुद्दे** और **आतंकवाद** के खिलाफ वैश्विक दबाव का सामना करना पड़ा है, जबकि उसे अपनी **राष्ट्रीय सुरक्षा** के हितों को भी प्राथमिकता देनी होती है।

निष्कर्ष (Conclusion)

विदेशी नीति तैयार करते समय देशों को **अंतर्राष्ट्रीय संबंधों**, **आर्थिक नीतियों**, **सुरक्षा चिंताओं**, और **सामाजिक बदलावों** के बीच संतुलन बनाए रखना होता है। वैश्वीकरण और तकनीकी विकास ने कुछ चुनौतियों को और बढ़ा दिया है, लेकिन इनसे निपटने के लिए देशों को कूटनीतिक, सामरिक और कानूनी दृष्टिकोण से उपायों पर विचार करना होता है।

रक्षा और परमाणु नीति (Defence and Nuclear Policy)

रक्षा नीति और **परमाणु नीति** किसी भी देश की **राष्ट्रीय सुरक्षा** का मुख्य आधार होती हैं। ये नीतियाँ देश की रक्षा क्षमता को बढ़ाने, सुरक्षा को सुनिश्चित करने, और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी शक्ति को प्रदर्शित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भारत की रक्षा और परमाणु नीति, भारतीय राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के साथ-साथ वैश्विक शांति और स्थिरता को भी ध्यान में रखती है।

---

1. भारत की रक्षा नीति (India's Defence Policy)

भारत की रक्षा नीति मुख्य रूप से **राष्ट्रीय सुरक्षा**, **सैन्य बलों की मजबूती**, और **आंतरिक सुरक्षा** को सुनिश्चित करने पर आधारित है। भारत की रक्षा नीति का उद्देश्य **चरणबद्ध तरीके से** अपनी सुरक्षा को बेहतर बनाना और विभिन्न वैश्विक खतरों से निपटना है। इसके अलावा, भारतीय रक्षा नीति में **रणनीतिक संप्रभुता** और **शांति** की भावना भी शामिल है।

मुख्य तत्व:

1. **संप्रभुता और राष्ट्रीय सुरक्षा**:

   * भारत की रक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य अपनी **संप्रभुता** और **राष्ट्रीय सुरक्षा** की रक्षा करना है। इसके लिए भारत की **सैन्य तैनाती**, **सैन्य योजनाएँ**, और **विकसित रक्षा उपकरण** महत्वपूर्ण हैं।

2. **सैन्य बलों का आधुनिकीकरण (Modernization of Armed Forces)**:

* भारतीय सेना, **नौसेना** और **वायु सेना** के लिए निरंतर **आधुनिकीकरण** किया जा रहा है। **नई तकनीकों** और **युद्ध उपकरणों** को अपनाया जा रहा है ताकि भारत अपने सैन्य बलों को अत्याधुनिक बना सके।

3. **आंतरिक सुरक्षा (Internal Security)**:

   * भारत की रक्षा नीति में **आंतरिक सुरक्षा** भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, विशेषकर **आतंकवाद**, **नक्सलवाद**, और **सार्वजनिक अशांति** जैसे मुद्दों से निपटना।
   * **सीआरपीएफ (CRPF)**, **बीएसएफ (BSF)**, और **सेंट्रल आर्म्ड पुलिस फोर्स (CAPF)** जैसी सशस्त्र पुलिस बलों का काम भी आंतरिक सुरक्षा की रक्षा करना है।

4. **सैन्य रणनीतियाँ और संयुक्त सैन्य अभ्यास (Military Strategy and Joint Exercises)**:

   * भारत, अपनी रक्षा नीति के तहत **सैन्य अभ्यास** और **मिलिट्री ड्रिल्स** करता है, जिनमें **अमेरिका, रूस, और अन्य मित्र देशों** के साथ

मिलकर अभ्यास होते हैं। इससे **सैन्य सहयोग** और **रणनीतिक साझेदारी** मजबूत होती है।

5. **रक्षा बजट (Defence Budget)**:

   * भारत का रक्षा बजट साल दर साल बढ़ रहा है। यह बजट सैन्य उपकरणों की खरीद, नई तकनीकियों के विकास और **सैन्य बलों की तैनाती** के लिए खर्च किया जाता है।

---

2. भारत की परमाणु नीति (India's Nuclear Policy)

भारत की परमाणु नीति, **न्यूक्लियर डिटरेन्स** (Nuclear Deterrence) और **संरक्षित परमाणु क्षमता** पर आधारित है। भारत ने **नुकसानदेह परमाणु युद्ध** को रोकने के लिए अपनी **सैन्य रणनीति** को मजबूत किया है। साथ ही, भारत की परमाणु नीति में **वैश्विक शांति** और **स्थिरता** को भी महत्व दिया गया है।

मुख्य तत्व:

1. **नो-फर्स्ट यूज़ (No First Use - NFU) नीति**:

   * भारत की परमाणु नीति में सबसे महत्वपूर्ण **"नो-फर्स्ट यूज़"** (NFU) का सिद्धांत है, जिसका अर्थ है कि भारत केवल आत्मरक्षा के लिए ही परमाणु हथियारों का उपयोग करेगा। इसका मतलब यह है कि अगर भारत पर परमाणु हमला नहीं किया जाता है, तो भारत पहले परमाणु हमले का कोई इरादा नहीं रखता।

2. **सम्पूर्ण परमाणु अस्थिरता का सिद्धांत (Credible Minimum Deterrence)**:

   * भारत की परमाणु नीति का एक अन्य महत्वपूर्ण सिद्धांत है **"Credible Minimum Deterrence"**, जिसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि भारत के पास ऐसी **परमाणु क्षमता** हो जो किसी भी हमले के खिलाफ **दृढ़ प्रतिक्रिया** देने के लिए सक्षम हो, लेकिन इस क्षमता का आकार न्यूनतम रखा जाए।

3. **सैन्य-रक्षात्मक परमाणु नीति**:

* भारत का परमाणु नीति मुख्य रूप से **सैन्य-रक्षात्मक** है। इसका उद्देश्य किसी भी प्रकार के युद्ध को रोकना और **अंतरराष्ट्रीय शांति** सुनिश्चित करना है।

* भारत परमाणु हथियारों का उपयोग किसी भी **विकृत उद्देश्य** के लिए नहीं करता है, बल्कि **न्यूक्लियर डिटरेन्स** के तौर पर अपनी क्षमता को रखता है ताकि किसी भी संभावित आक्रमण को रोका जा सके।

4. **पारदर्शिता और जवाबदेही**:

* भारत ने अपनी परमाणु नीति में **पारदर्शिता** और **जवाबदेही** सुनिश्चित करने के लिए कई उपाय किए हैं। **भारत सरकार** ने परमाणु हथियारों के उपयोग के संबंध में स्पष्ट सिद्धांतों और प्रतिबद्धताओं को सार्वजनिक किया है, जिससे दुनिया को यह समझ में आता है कि भारत अपने परमाणु कार्यक्रम को जिम्मेदारी से चला रहा है।

5. **संविधान और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताएँ (Constitutional and International Commitments)**:

* भारत की परमाणु नीति में **न्यूक्लियर नॉन-प्रोलिफेरेशन (Nuclear Non-Proliferation)** की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत ने **परमाणु अप्रसार संधि (NPT)** पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं, क्योंकि यह संधि **न्यूक्लियर

हथियारों के अधिकार** को केवल पांच देशों (अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस, ब्रिटेन) तक सीमित करती है। हालांकि, भारत **न्यूक्लियर अप्रसार** और **कूटनीतिक समाधानों** की ओर अग्रसर है।

6. **परमाणु आपूर्ति समूह (Nuclear Suppliers Group - NSG)** में सदस्यता**:

   * भारत, अपनी परमाणु नीति के तहत **परमाणु आपूर्ति समूह (NSG)** का सदस्य बनने के लिए प्रयासरत रहा है, ताकि उसे **परमाणु प्रौद्योगिकी** और **संसाधनों की आपूर्ति** प्राप्त हो सके।

---

3. परमाणु हथियारों के विकास और परीक्षण (Nuclear Weapons Development and Testing)

1. **परमाणु परीक्षण (Nuclear Tests)**:

   * भारत ने 1974 में **"स्माइलिंग बुद्धा"** नामक पहला परमाणु परीक्षण किया था, जो एक शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट था। इसके बाद, 1998 में

पोखरण-II परीक्षणों के दौरान भारत ने **5 परमाणु बम** विस्फोट किए। इस परीक्षण ने भारत को एक **परमाणु शक्ति** के रूप में स्थापित किया।

2. **विकसित परमाणु शक्ति**:

   * आज भारत के पास **सामरिक और रणनीतिक** परमाणु हथियार हैं, जिनमें **पृथ्वी**, **अग्नि** और **पिनाका** जैसे बैलिस्टिक मिसाइल सिस्टम शामिल हैं। साथ ही, भारत की परमाणु पनडुब्बी **आईएनएस अरिहंत** और **मिसाइल ट्रैकिंग उपग्रह** जैसी सुविधाएँ भारत की परमाणु शक्ति को और मजबूत करती हैं।

---

4. भारत की रक्षा और परमाणु नीति का वैश्विक प्रभाव (Global Impact of India's Defence and Nuclear Policy)

1. **दुनिया की नजर में भारत की शक्ति**:

   * भारत की रक्षा और परमाणु नीति ने **दुनिया के अन्य देशों** को यह संकेत दिया है कि भारत अपनी सुरक्षा के लिए सक्षम है और विश्व शांति में भी योगदान दे सकता है। हालांकि, कुछ देशों ने भारत के परमाणु कार्यक्रम पर

विरोध किया है, लेकिन भारत ने हमेशा शांतिपूर्ण उपयोग और संयम के सिद्धांतों का पालन किया है।

2. **भारत की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति**:

   * भारत की परमाणु नीति ने उसे वैश्विक कूटनीति में एक मजबूत स्थान दिलाया है। **संयुक्त राष्ट्र** और **आंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA)** के साथ भारत ने **साझेदारी** की है, और अपनी रक्षा नीति को **वैश्विक सुरक्षा** के संदर्भ में एक जिम्मेदार शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष (Conclusion)

भारत की रक्षा और परमाणु नीति एक **संतुलित और जिम्मेदार** दृष्टिकोण को दर्शाती है। जहां एक ओर भारत अपनी **राष्ट्रीय सुरक्षा** और **संप्रभुता** को सुनिश्चित करने के लिए परमाणु और सैन्य शक्तियों का उपयोग करता है, वहीं दूसरी ओर भारत **शांति** और **वैश्विक स्थिरता** को भी महत्व देता है। **नो-फर्स्ट यूज़** और **विश्व शांति** के प्रति प्रतिबद्धता ने भारत की परमाणु नीति

मानवाधिकार और सीमा पार आतंकवाद (Human Rights and Cross-Border Terrorism)

मानवाधिकार और **सीमा पार आतंकवाद** (Cross-border Terrorism) दो महत्वपूर्ण और जटिल मुद्दे हैं जो वैश्विक और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरे पैदा करते हैं। इन मुद्दों का प्रभाव **राजनीतिक**, **सामाजिक**, और **आर्थिक** दृष्टिकोण से व्यापक है। जहां एक ओर मानवाधिकारों की रक्षा सभी देशों की जिम्मेदारी है, वहीं सीमा पार आतंकवाद देशों के लिए एक बड़ी सुरक्षा चुनौती बन गया है।

1. मानवाधिकार (Human Rights)

मानवाधिकार वे मौलिक अधिकार हैं जो हर व्यक्ति को जन्म से ही मिलते हैं। इन अधिकारों का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को **स्वतंत्रता**, **समानता**, और **सम्मान** प्रदान करना है। मानवाधिकार का पालन करने की जिम्मेदारी न केवल **सरकारों** पर, बल्कि **अंतर्राष्ट्रीय संगठनों** पर भी है।

मानवाधिकार के प्रमुख सिद्धांत:

* **जीवन का अधिकार**: हर व्यक्ति को जीवन जीने का अधिकार है।

* **स्वतंत्रता का अधिकार**: हर व्यक्ति को अपनी इच्छाओं और विचारों के अनुसार जीने का अधिकार है, जिसमें **व्यक्तिगत स्वतंत्रता** और **विचारों की स्वतंत्रता** शामिल है।

* **समानता का अधिकार**: सभी लोगों को समान अधिकार और अवसर मिलने चाहिए, चाहे उनकी जाति, धर्म, लिंग या सामाजिक स्थिति कुछ भी हो।

* **राजनीतिक और नागरिक अधिकार**: जैसे **मौलिक अधिकार**, **स्वतंत्रता** से संबंधित अधिकार, और **लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं** में भाग लेने का अधिकार।

* **आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकार**: जैसे **शिक्षा**, **स्वास्थ्य** और **काम करने के अधिकार**।

मानवाधिकार उल्लंघन (Human Rights Violations):

मानवाधिकार उल्लंघन विभिन्न रूपों में हो सकते हैं, जैसे:

* **बर्बरता** और **मूल अधिकारों का उल्लंघन**: जैसे **मूल्यांकन का अधिकार**, **बलात्कार**, और **अत्याचार**।

* **आतंकवाद और युद्ध के दौरान मानवाधिकार उल्लंघन**: आतंकवादी समूहों द्वारा नागरिकों पर हमले, बच्चों की भर्ती, और दमनकारी शासनों द्वारा असहमति व्यक्त करने वालों पर अत्याचार।

* **शरणार्थियों और विस्थापित लोगों के अधिकार**: सीमा पार युद्ध और संघर्षों के कारण विस्थापित लोगों की स्थिति गंभीर हो सकती है, और उनका मानवाधिकारों का उल्लंघन होता है।

---

2. सीमा पार आतंकवाद (Cross-border Terrorism)

सीमा पार आतंकवाद एक ऐसी स्थिति है जिसमें आतंकवादी तत्व एक देश से दूसरे देश की सीमा पार कर हमला करते हैं। यह आतंकवाद की एक गंभीर और वैश्विक समस्या बन चुकी है, और इसके कारण देशों के बीच तनाव, असुरक्षा और राजनीतिक संघर्ष बढ़ते हैं।

सीमा पार आतंकवाद के कारण:

* **आतंकवादी समूहों का समर्थन**: कुछ देशों द्वारा आतंकवादी समूहों को शरण देना, धन देना, प्रशिक्षण देना और उनकी गतिविधियों को बढ़ावा देना। जैसे पाकिस्तान द्वारा **जम्मू-कश्मीर** में सक्रिय आतंकवादी समूहों का समर्थन।
* **राजनीतिक उद्देश्य**: आतंकवादी समूह अपने राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हिंसा का सहारा लेते हैं। वे **स्वतंत्रता संग्राम**, **धार्मिक

संघर्ष** या **राष्ट्रीय संप्रभुता** की बात करते हुए आतंकवादी गतिविधियाँ करते हैं।

* **वैश्विक और क्षेत्रीय संघर्ष**: कुछ देशों में आतंकवाद वैश्विक या क्षेत्रीय संघर्षों का हिस्सा बन जाता है, जिससे आतंकवाद की समस्या और गंभीर हो जाती है।

सीमा पार आतंकवाद के प्रभाव:

* **राष्ट्रीय सुरक्षा पर खतरा**: सीमा पार आतंकवाद से देश की **राष्ट्रीय सुरक्षा** पर गंभीर खतरा हो सकता है। इससे **सैनिकों**, **नागरिकों**, और **आधिकारिक संस्थाओं** पर हमले हो सकते हैं।

* **राजनीतिक और कूटनीतिक तनाव**: सीमा पार आतंकवाद के कारण देशों के बीच **राजनीतिक** और **कूटनीतिक तनाव** बढ़ सकते हैं। जैसे **भारत और पाकिस्तान** के बीच जम्मू-कश्मीर के मुद्दे पर लगातार संघर्ष और आतंकवाद।

* **आर्थिक नुकसान**: आतंकवाद के कारण **विनाशकारी हमलों** से **आर्थिक नुकसान** होता है। आतंकवादी हमले **व्यापार**, **निवेश** और **पर्यटन** जैसी गतिविधियों को प्रभावित कर सकते हैं, जिससे विकास में रुकावट आती है।

* **मानवाधिकार उल्लंघन**: सीमा पार आतंकवाद का परिणाम आम नागरिकों पर हिंसा, अत्याचार, और मानवीय संकट के रूप में होता है। आतंकवादी हमले अक्सर **नागरिकों** के **मृत्यु** और **विनाश** का कारण बनते हैं।

---

3. मानवाधिकार और सीमा पार आतंकवाद के बीच संबंध (Relationship between Human Rights and Cross-border Terrorism)

सीमा पार आतंकवाद और मानवाधिकारों के बीच एक जटिल संबंध होता है। आतंकवादियों द्वारा किए गए हमलों में **नागरिकों** के अधिकारों का उल्लंघन होता है, और आतंकवाद से निपटने के दौरान सुरक्षा बलों द्वारा **मानवाधिकारों का उल्लंघन** भी हो सकता है।

आतंकवादियों द्वारा मानवाधिकारों का उल्लंघन:

* **निर्दोष नागरिकों की हत्या**: आतंकवादी हमलों में निर्दोष नागरिकों की जान जाती है, जो **जीवन के अधिकार** का उल्लंघन है।

* **युद्ध अपराध और अत्याचार**: आतंकवादी समूहों द्वारा निर्दोष नागरिकों के खिलाफ युद्ध अपराध, जैसे **यौन हिंसा**, **अत्याचार** और **बंधक बनाना**।

* **मानवाधिकार कार्यकर्ताओं पर हमले**: आतंकवादी समूह अक्सर मानवाधिकार कार्यकर्ताओं, पत्रकारों, और सामाजिक कार्यकर्ताओं को निशाना बनाते हैं, जो **स्वतंत्रता** और **समानता** के अधिकारों के लिए काम कर रहे होते हैं।

सुरक्षा बलों द्वारा मानवाधिकार उल्लंघन:

* **अत्यधिक बल का प्रयोग**: सीमा पार आतंकवाद से निपटने के लिए सुरक्षा बलों द्वारा अत्यधिक बल का प्रयोग किया जाता है, जिससे **नागरिकों** के **अधिकारों** का उल्लंघन हो सकता है।

* **ग़लत गिरफ्तारी और उत्पीड़न**: आतंकवादियों से निपटने के दौरान, सुरक्षा बलों द्वारा **निर्दोष व्यक्तियों** को गलत तरीके से गिरफ्तार करना और **उनके अधिकारों का उल्लंघन** करना एक सामान्य घटना हो सकती है।

* **सैन्य आपरेशन और नागरिकों का नुकसान**: आतंकवाद के खिलाफ सैन्य ऑपरेशनों के दौरान नागरिकों की हत्या, संपत्ति का नष्ट होना और **मानवाधिकारों का उल्लंघन** हो सकता है।

---

4. समाधान और कूटनीतिक उपाय (Solutions and Diplomatic Measures)

1. **वैश्विक सहयोग**: सीमा पार आतंकवाद से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर **सहयोग** जरूरी है। देशों को आतंकवादियों को शरण देने वाले देशों के खिलाफ **दबाव डालने** और **साझा प्रयास** करने की आवश्यकता है।

2. **मानवाधिकारों की रक्षा**: आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में **मानवाधिकारों का उल्लंघन** रोकने के लिए सुरक्षा बलों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए और उन्हें **मानवाधिकार** से संबंधित मानक प्रदान किए जाने चाहिए।

3. **संयुक्त राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय संगठन**: संयुक्त राष्ट्र, **अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (ICJ)** और **मानवाधिकार परिषद** को सीमा पार आतंकवाद और मानवाधिकार उल्लंघनों से निपटने के लिए सख्त **कानूनी** और **कूटनीतिक उपाय** अपनाने चाहिए।

4. **शांति निर्माण और पुनर्निर्माण**: देशों में **संघर्ष के बाद शांति निर्माण** की प्रक्रिया को मजबूत करना, ताकि आतंकवाद के कारण हुए **सामाजिक,

मानसिक** और **आर्थिक नुकसान** को कम किया जा सके और **मानवाधिकारों का सम्मान** किया जा सके।

निष्कर्ष (Conclusion)

मानवाधिकार और सीमा पार आतंकवाद दोनों ही महत्वपूर्ण और संवेदनशील मुद्दे हैं। आतंकवाद मानवाधिकारों का उल्लंघन करता है और इसके खिलाफ कार्रवाई करने में मानवाधिकारों का भी उल्लंघन हो सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि आतंकवाद से निपटने के साथ-साथ **मानवाधिकारों** की रक्षा की जाए, और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर **सामूहिक प्रयासों** के माध्यम से समाधान निकाला जाए।

विदेश नीति का मूल्यांकन (Assessment of Foreign Policy)

विदेश नीति किसी भी देश की **आंतरिक** और **बाहरी रणनीतिक** प्राथमिकताओं का समावेश होती है। यह नीति देश के राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के लिए निर्धारित की जाती है और इसकी सफलता या विफलता का मूल्यांकन कई कारकों के आधार पर किया जाता है। विदेश नीति के मूल्यांकन से यह स्पष्ट होता है कि एक देश ने **वैश्विक संबंधों**, **सुरक्षा**, **आर्थिक

विकास** और **राजनीतिक स्थिरता** को सुनिश्चित करने में कितनी सफलता प्राप्त की है।

भारत की **विदेश नीति** का मूल्यांकन करने के लिए हमें निम्नलिखित पहलुओं पर विचार करना चाहिए:

---

1. राष्ट्रीय सुरक्षा (National Security)

राष्ट्रीय सुरक्षा एक देश के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिकता होती है, और विदेश नीति का एक बड़ा हिस्सा इसकी रक्षा करना है। भारत की विदेश नीति को **सुरक्षा दृष्टिकोण** से मूल्यांकित किया जाता है, जो खासकर **पाकिस्तान** और **चीन** जैसी देशों से उत्पन्न होने वाले खतरों के संदर्भ में किया जाता है।

* **भारत-पाकिस्तान रिश्ते**: भारत ने अपनी विदेश नीति के माध्यम से **कश्मीर मुद्दा**, **आतंकवाद** और **सैन्य रणनीतियाँ** को निपटाने की कोशिश की है। हालांकि, **पाकिस्तान** के साथ संबंधों में कई बार तनाव उत्पन्न हुआ है, लेकिन भारत ने कूटनीतिक पहलुओं को महत्व दिया है।

* **भारत-चीन संबंध**: चीन के साथ भारत का **सीमाई विवाद** और **लद्दाख** क्षेत्र में तनाव, भारत की विदेश नीति के लिए बड़ी चुनौती रही है। इसके बावजूद, भारत ने **चीन के साथ व्यापार संबंध** बनाए रखे हैं और **अंतरराष्ट्रीय मंचों पर** इसका समाधान खोजने की कोशिश की है।

मूल्यांकन: भारत ने **आतंकवाद** के खिलाफ **आत्मरक्षा** के सिद्धांत को अपनाया है, लेकिन कुछ क्षेत्रों में भारत को **चीन और पाकिस्तान** से उत्पन्न खतरों का सामना करना पड़ा है। हालांकि, सुरक्षा रणनीतियाँ और कूटनीतिक प्रयास अभी भी विकसित हो रहे हैं।

---

2. वैश्विक कूटनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंध (Global Diplomacy and International Relations)

भारत ने अपनी **विदेश नीति** को **संसद, अंतर्राष्ट्रीय संधियों, और कूटनीतिक संकल्पों** के तहत मजबूत किया है। भारत के **संयुक्त राष्ट्र (UN)**, **वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन (WTO)**, और **आंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA)** जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में सक्रिय भूमिका है। इसके साथ ही भारत ने **रूस, अमेरिका, जापान** और अन्य देशों के साथ कूटनीतिक संबंधों को भी मजबूत किया है।

* **सार्क और ब्रिक्स**: **दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC)** में भारत की सक्रियता, साथ ही **ब्रिक्स (BRICS)** देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी ने भारत को वैश्विक मंच पर महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है।

* **भारत-यूएस संबंध**: भारत ने अपनी **यूएस के साथ साझेदारी** को **आर्थिक, सुरक्षा, और सामरिक** दृष्टिकोण से मजबूत किया है। दोनों देशों के बीच व्यापार, **रक्षा समझौते** और **क्लाइमेट चेंज** पर सहयोग बढ़ा है।

मूल्यांकन: भारत ने अपनी विदेश नीति को **वैश्विक संदर्भ** में काफी सफलतापूर्वक आकार दिया है और **संयमित कूटनीति** के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी स्थिति को मजबूत किया है।

---

3. आर्थिक संबंध और व्यापार (Economic Relations and Trade)

भारत की विदेश नीति में **आर्थिक नीति** का अहम स्थान है, क्योंकि **वैश्विक व्यापार** और **निवेश** में भागीदारी भारत की **आर्थिक वृद्धि**

के लिए महत्वपूर्ण है। भारत ने अपने **आर्थिक संबंधों** को बढ़ाने के लिए **निवेश प्रवाह** को बढ़ावा देने के लिए कई उपाय किए हैं।

* **विकसित देशों के साथ व्यापार**: भारत ने **संयुक्त राज्य अमेरिका**, **यूरोपीय संघ** और **जापान** जैसे देशों के साथ **व्यापार समझौते** और **निवेश संधियाँ** की हैं।

* **आर्थिक सहयोग और सहायता**: भारत ने **अफ्रीका**, **एशिया** और **लातिन अमेरिका** जैसे क्षेत्रों में **विकासशील देशों** के साथ **आर्थिक सहयोग** बढ़ाया है। इसके अलावा, भारत ने **मेडिकल डिप्लोमेसी** के माध्यम से वैश्विक स्तर पर **स्वास्थ्य सहायता** प्रदान की है, विशेषकर **कोविड-19 महामारी** के दौरान।

मूल्यांकन: भारत ने **आर्थिक कूटनीति** के तहत **वैश्विक व्यापार** में अपनी भूमिका को बढ़ाया है। हालांकि, **व्यापार घाटा** और **संसाधन वितरण** में कुछ समस्याएँ हैं, लेकिन **विकसित देशों** और **विकासशील देशों** के साथ संबंधों में सुधार हुआ है।

---

4. क्षेत्रीय सहयोग और पड़ोसी देशों से संबंध (Regional Cooperation and Relations with Neighbors)

भारत की विदेश नीति में **पड़ोसी देशों** के साथ संबंधों को मजबूत करना एक अहम उद्देश्य है। भारत ने **श्रीलंका**, **नेपाल**, **भूटान**, **म्यांमार**, और **बांग्लादेश** के साथ अपने रिश्तों को सशक्त किया है।

* **महाराष्ट्र और श्रीलंका**: भारत और श्रीलंका के बीच **सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रिश्ते** मजबूत हैं, लेकिन कुछ **राजनीतिक विवाद** जैसे तमिलों के अधिकारों पर तनाव पैदा हुए हैं।

* **नेपाल और बांग्लादेश**: नेपाल के साथ **सीमा विवाद** और **बांग्लादेश** के साथ व्यापार और **जल संसाधनों** के मुद्दे पर भारत की नीति को जटिल परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है।

मूल्यांकन: भारत ने अपने **पड़ोसी देशों** के साथ कूटनीतिक संबंधों को मजबूत किया है, लेकिन कुछ क्षेत्रों में **सीमा विवाद** और **राजनीतिक असहमति** अब भी हैं।

---

5. पर्यावरणीय और जलवायु परिवर्तन (Environmental and Climate Change Policies)

भारत ने **जलवायु परिवर्तन** और **पर्यावरणीय संकट** के संदर्भ में **पेरिस जलवायु समझौते** में अपनी भूमिका निभाई है। भारत की विदेश नीति में **पर्यावरणीय संरक्षण** और **क्लाइमेट चेंज** पर वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देने की कोशिश की गई है।

* **भारत और पर्यावरणीय साझेदारी**: भारत ने विभिन्न देशों के साथ **सौर ऊर्जा**, **नवीकरणीय ऊर्जा**, और **वायु प्रदूषण** पर साझेदारी की है।

* **कोप-26 समझौता**: भारत ने **कोप-26 जलवायु सम्मेलन** में **जलवायु परिवर्तन** से निपटने के लिए अपनी प्रतिबद्धता दिखाई।

मूल्यांकन: भारत की विदेश नीति में **पर्यावरणीय मुद्दों** को प्राथमिकता दी गई है और इस दिशा में कई ठोस कदम उठाए गए हैं। हालांकि, **आर्थिक विकास** और **पर्यावरणीय संरक्षण** के बीच संतुलन बनाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

---

6. मानवाधिकार और वैश्विक शांति (Human Rights and Global Peace)

भारत की विदेश नीति में **मानवाधिकार** और **वैश्विक शांति** के प्रति प्रतिबद्धता को भी प्रमुख स्थान दिया गया है। भारत ने **संयुक्त राष्ट्र** और अन्य अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर मानवाधिकार उल्लंघन के खिलाफ अपनी आवाज उठाई है।

* **संयुक्त राष्ट्र में भूमिका**: भारत ने **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC)** में स्थायी सदस्यता की कोशिश की है और **शांति स्थापना** मिशनों में सक्रिय भूमिका निभाई है।

मूल्यांकन: भारत ने मानवाधिकारों और **वैश्विक शांति** के मुद्दों पर अपनी कूटनीति को प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया है, लेकिन **अंतर्राष्ट्रीय दबाव** और **सैन्य संघर्ष** के चलते चुनौतियाँ बनी रहती हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

भारत की **विदेश नीति** ने **वैश्विक मंच** पर अपनी **स्ट्रेटेजिक ताकत** और **कूटनीतिक** नेतृत्व को प्रभावी रूप से प्रदर्शित किया है। हालांकि, कुछ क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों के कारण भारत को चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, लेकिन विदेश नीति की सफलता **भारत के राष्ट्रीय हितों** की रक्षा में महत्वपूर्ण रही है।

इस नीति को और बेहतर बनाने के लिए **सामरिक**, **आर्थिक**, और **कूटनीतिक** दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए निरंतर सुधार और संतुलन की आवश्यकता है।

UNIT-3

परिवर्तित अंतर्राष्ट्रीय वातावरण (Changing International Environment)

अंतर्राष्ट्रीय वातावरण में बदलाव एक निरंतर प्रक्रिया है, जो वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था, और सामाजिक संरचनाओं के विकास से प्रभावित होती है। यह बदलाव विभिन्न कारणों से होता है, जैसे तकनीकी प्रगति, राजनीतिक बदलाव, वैश्विक संघर्ष, जलवायु परिवर्तन, और देशों के बीच अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में बदलाव। बदलता अंतर्राष्ट्रीय वातावरण देशों के नीति निर्माण, कूटनीति और वैश्विक सहयोग पर गहरा प्रभाव डालता है।

आइए, हम इस बदलते अंतर्राष्ट्रीय वातावरण के प्रमुख तत्वों और कारणों को समझते हैं:

---

1. वैश्विक शक्ति संतुलन का परिवर्तन (Shifting Global Power Balance)

वैश्विक शक्ति संतुलन में बड़े बदलाव हो रहे हैं, जो अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल रहे हैं।

* **अमेरिका का उभरता दबाव**: अमेरिका पिछले कई दशकों से वैश्विक शक्ति का प्रमुख केंद्र रहा है। हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में **चीन** और **भारत** जैसे देशों का उभरता प्रभाव अमेरिका की वैश्विक दबाव को चुनौती दे रहा है।

* **चीन का उदय**: **चीन** ने अपने **आर्थिक विकास**, **सैन्य ताकत**, और **वैश्विक कूटनीति** के माध्यम से खुद को **विश्व की दूसरी सबसे बड़ी शक्ति** के रूप में स्थापित किया है। यह अमेरिका और चीन के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा और शक्ति संघर्ष का कारण बन रहा है।

* **भारत का बढ़ता प्रभाव**: भारत भी वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है। भारत ने **आर्थिक वृद्धि** और **कूटनीतिक प्रयासों** के माध्यम से अपनी भूमिका को **अंतर्राष्ट्रीय मंच** पर मजबूत किया है। भारत ने कई **वैश्विक मुद्दों** पर अपने दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है, जैसे **जलवायु परिवर्तन**, **मानवाधिकार**, और **सुरक्षा नीति**।

---

2. वैश्वीकरण और क्षेत्रीय सहयोग (Globalization and Regional Cooperation)

वैश्वीकरण ने दुनिया को एक-दूसरे से और करीब ला दिया है, जिससे व्यापार, संस्कृति, और प्रौद्योगिकी के आदान-प्रदान में वृद्धि हुई है। हालांकि, इसके साथ ही कुछ देशों के बीच **संपत्ति असमानता**, **सांस्कृतिक संकुचन**, और **आर्थिक दबाव** भी उत्पन्न हुए हैं।

* **आर्थिक और व्यापारिक वैश्वीकरण**: दुनिया भर में **विश्व व्यापार संगठन (WTO)**, **आर्थिक साझेदारी समझौते (FTA)**, और **क्षेत्रीय आर्थिक संगठन** जैसे **ASEAN, EU, BRICS** देशों के बीच सहयोग बढ़ा है। यह वैश्विक व्यापार को बढ़ावा दे रहा है, लेकिन साथ ही **व्यापार युद्ध** और **नौकरियों में असमानता** जैसी समस्याएँ भी सामने आ रही हैं।

* **क्षेत्रीय सहयोग का महत्व**: **सार्क**, **ASEAN**, **BRICS**, और **EU** जैसे संगठनों में देशों के बीच सहयोग बढ़ा है। क्षेत्रीय मुद्दों पर सहयोग बढ़ाने के लिए इन संगठनों ने विभिन्न पहल की हैं, जैसे **आर्थिक विकास**, **सुरक्षा**, और **संस्कृतिक आदान-प्रदान**।

---

3. तकनीकी विकास और साइबर युद्ध (Technological Advancements and Cyber Warfare)

तकनीकी विकास ने वैश्विक राजनीति और सुरक्षा के परिदृश्य को पूरी तरह से बदल दिया है। **सूचना प्रौद्योगिकी**, **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI)**, और **साइबर युद्ध** जैसी नई तकनीकों ने देशों की सुरक्षा रणनीतियों में बदलाव किया है।

* **साइबर सुरक्षा**: **साइबर हमले** अब **ग्लोबल सिक्योरिटी थ्रेट** बन चुके हैं, जो राष्ट्रीय सुरक्षा को चुनौती दे रहे हैं। विभिन्न देशों के बीच **साइबर युद्ध** और **डेटा चोरी** जैसी घटनाएँ बढ़ रही हैं, जिससे अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में तनाव उत्पन्न हो रहा है।

* **स्पेस टेक्नोलॉजी**: अंतरिक्ष में **सैन्य और व्यापारिक गतिविधियाँ** बढ़ रही हैं। **चीन, रूस, और अमेरिका** जैसे देश **स्पेस फोर्स** और **सैटेलाइट टेक्नोलॉजी** के क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, जो भविष्य में अंतर्राष्ट्रीय शक्ति संघर्ष को और बढ़ा सकते हैं।

---

4. वैश्विक पर्यावरणीय संकट (Global Environmental Crisis)

जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकट ने अंतर्राष्ट्रीय नीति और सहयोग को प्रभावित किया है। बढ़ता हुआ **ग्लोबल वार्मिंग**, **प्राकृतिक आपदाएँ**, और **प्रदूषण** देशों के लिए एक नई चुनौती बन गई है।

* **पेरिस जलवायु समझौता**: दुनिया के प्रमुख देशों ने **जलवायु परिवर्तन** से निपटने के लिए **पेरिस जलवायु समझौते** में भाग लिया है। इसमें देशों ने **ग्लोबल वार्मिंग** को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने का संकल्प लिया है।

* **नवीकरणीय ऊर्जा की दिशा में बदलाव**: **सौर ऊर्जा**, **वायु ऊर्जा**, और **जल ऊर्जा** जैसे नवीकरणीय स्रोतों की ओर देशों का रुख बढ़ा है, ताकि

वे **पारंपरिक ऊर्जा संसाधनों** पर निर्भरता कम कर सकें और **पर्यावरणीय संकट** से निपट सकें।

---

5. वैश्विक स्वास्थ्य संकट (Global Health Crisis)

कोविड-19 महामारी ने दुनिया को यह दिखा दिया कि **वैश्विक स्वास्थ्य संकट** किस हद तक **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग** की आवश्यकता होती है। **स्वास्थ्य संकटों** के कारण देशों के बीच **वैश्विक सहयोग** की आवश्यकता अधिक बढ़ गई है।

* **वैक्सीनेशन**: **वैश्विक टीकाकरण अभियान** और **स्वास्थ्य संसाधनों** की उपलब्धता से देशों के बीच सहयोग बढ़ा है, लेकिन **स्वास्थ्य असमानता** और **टीके की आपूर्ति में असंतुलन** जैसी समस्याएँ भी सामने आई हैं।

* **वैश्विक स्वास्थ्य संगठन (WHO)**: विश्व स्वास्थ्य संगठन ने देशों के स्वास्थ्य संकटों के समाधान के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन इसमें **आलोचनाएँ** भी आईं कि कुछ देशों ने वैश्विक नीतियों का पालन नहीं किया।

---

6. नए वैश्विक संघर्ष और शक्ति की राजनीति (New Global Conflicts and Geopolitics)

दुनिया में **राजनीतिक तनाव** और **संघर्ष** की स्थितियाँ भी बदल रही हैं, जैसे **रूस-यूक्रेन युद्ध**, **मध्य-पूर्व में संघर्ष**, और **अफ्रीका में अस्थिरता**।

* **रूस-यूक्रेन युद्ध**: रूस द्वारा **यूक्रेन पर आक्रमण** ने **पश्चिमी देशों** और **रूस** के बीच तनाव बढ़ा दिया है। इस संघर्ष ने **वैश्विक सुरक्षा**, **ऊर्जा आपूर्ति**, और **आर्थिक विकास** को प्रभावित किया है।

* **मध्य-पूर्व में संकट**: **सीरिया, लीबिया, और इराक** जैसे देशों में राजनीतिक अस्थिरता और **धार्मिक संघर्ष** बढ़े हैं, जिनका प्रभाव **वैश्विक शांति** और **राजनीतिक संतुलन** पर पड़ा है।

---

7. देशों के बीच बढ़ते हुए सहयोग और प्रतिस्पर्धा (Increasing Cooperation and Competition Among Countries)

विश्व में देशों के बीच **सहयोग और प्रतिस्पर्धा** का संतुलन बदल रहा है। जहाँ कुछ देशों के बीच सहयोग बढ़ रहा है, वहीं कुछ देशों के बीच **प्रतिस्पर्धा** और **संघर्ष** भी बढ़े हैं।

* **BRICS (ब्रिक्स)**, **G20**, और **ASEAN** जैसे संगठनों में देशों के बीच **आर्थिक और राजनीतिक सहयोग** बढ़ा है।

* दूसरी ओर, **यूएस-चीन संघर्ष**, **भारत-पाकिस्तान संबंध**, और **भारत-चीन विवाद** जैसे मामलों में देशों के बीच प्रतिस्पर्धा और **ग्लोबल शक्ति संघर्ष** बढ़ रहे हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

परिवर्तित अंतर्राष्ट्रीय वातावरण ने वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था, और समाज में बड़े बदलाव किए हैं। **सामरिक प्रतिस्पर्धा**, **आर्थिक विकास**, **पर्यावरणीय संकट**, और **वैश्विक स्वास्थ्य संकट** जैसे तत्वों ने देशों के

बीच संबंधों को प्रभावित किया है। हालांकि वैश्विक सहयोग में बढ़ोतरी हुई है, लेकिन वैश्विक अस्थिरता और संघर्ष भी बढ़े हैं।

दुनिया को **वैश्विक चुनौतियों** का सामना करने के लिए एकजुट होकर काम करना होगा और **साझा समाधान** की दिशा में आगे बढ़ना होगा।

परिवर्तित अंतर्राष्ट्रीय वातावरण का भारतीय विदेश नीति पर प्रभाव (Impact of Changing International Environment on Indian Foreign Policy)

वैश्विक परिदृश्य में बदलाव ने भारत की **विदेश नीति** को कई तरीकों से प्रभावित किया है। **अंतर्राष्ट्रीय शक्ति संतुलन**, **वैश्वीकरण**, **तकनीकी विकास**, **पर्यावरणीय संकट** और **वैश्विक स्वास्थ्य संकट** जैसी वैश्विक परिस्थितियाँ भारतीय कूटनीति को नए तरीके से आकार दे रही हैं। यह बदलाव भारत को **सुरक्षा**, **आर्थिक विकास**, **वैश्विक सहयोग** और **संप्रभुता** को बनाए रखने के संदर्भ में नए दृष्टिकोण और रणनीतियाँ अपनाने के लिए मजबूर कर रहा है।

आइए, हम देखें कि इन परिवर्तनों का भारतीय विदेश नीति पर क्या प्रभाव पड़ा है:

---

1. सुरक्षा और सामरिक साझेदारी (Security and Strategic Partnerships)

भारत को **सुरक्षा** से संबंधित कई वैश्विक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, विशेषकर **चीन** और **पाकिस्तान** जैसे देशों से उत्पन्न होने वाले खतरों के संदर्भ में। बदलते अंतर्राष्ट्रीय वातावरण के चलते भारत की सुरक्षा नीति में बदलाव आया है।

चीन के साथ बढ़ता तनाव:

* **चीन** के साथ **सीमा विवाद** और **दक्षिण एशिया** में उसकी बढ़ती सैन्य शक्ति के कारण भारत को अपनी **सुरक्षा नीति** में बदलाव करना पड़ा है। इसके अलावा, **चीन की "बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव"** और **सीपीईसी** जैसी परियोजनाएँ भारत के लिए चिंता का विषय बन चुकी हैं।

* **भारत-चीन सीमा विवाद** ने भारत को **अमेरिका** और **जापान** जैसे देशों के साथ **सामरिक साझेदारी** को मजबूत करने के लिए प्रेरित किया। **क्वाड (Quad)** जैसे समूहों में भारत की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है, जिसमें भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं। यह साझेदारी

चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने की दिशा में भारत का रणनीतिक कदम है।

पाकिस्तान के साथ तनाव:

* **पाकिस्तान** के साथ सीमा पर **आतंकवाद** और **सैन्य संघर्ष** लगातार बने रहते हैं। भारत ने अपनी विदेश नीति में **आतंकवाद** के खिलाफ कठोर रुख अपनाया है। **पुलवामा हमले** और **बालाकोट एयरस्ट्राइक** जैसी घटनाएँ भारत की **रक्षात्मक** और **सैन्य नीति** को नया रूप दे रही हैं।

भारत-यूएस संबंधों का सुधार:

* अमेरिका और भारत के बीच **रक्षा समझौते**, **सैन्य सहयोग** और **स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप** ने भारतीय विदेश नीति को नई दिशा दी है। भारत ने अमेरिका के साथ अपनी **रक्षा साझेदारी** को मजबूत किया है, खासकर **ह्वाइट हाउस** और **पेंटागन** के साथ सहमति बढ़ी है।

---

2. आर्थिक कूटनीति और व्यापार (Economic Diplomacy and Trade)

वैश्विक आर्थिक परिवर्तनों का भारतीय विदेश नीति पर गहरा प्रभाव पड़ा है। भारत ने **आर्थिक कूटनीति** को बढ़ावा देने के लिए अपनी विदेश नीति में कई बदलाव किए हैं, ताकि वह **व्यापारिक अवसरों** का लाभ उठा सके और **निवेश आकर्षित कर सके**।

वैश्वीकरण का प्रभाव:

* **वैश्वीकरण** ने भारत को **वैश्विक बाजार** में अपनी उपस्थिति बढ़ाने का अवसर दिया है। भारत ने अपनी **व्यापार नीति** को नए वैश्विक नियमों के अनुसार ढाला है और **दुनिया भर में व्यापारिक साझेदारियाँ** स्थापित की हैं।

* **मुश्किल व्यापारिक माहौल** और **व्यापार युद्ध** के बावजूद, भारत ने अपनी **"मेक इन इंडिया"** और **"आत्मनिर्भर भारत"** जैसी नीतियों को बढ़ावा दिया है, ताकि वह **आर्थिक स्वतंत्रता** और **स्वदेशी उत्पादन** को बढ़ावा दे सके।

भारत और एशियाई देशों के साथ व्यापार:

* भारत ने **ASEAN**, **RCEP** (Regional Comprehensive Economic Partnership) जैसे **आर्थिक संगठन** में अपनी भूमिका को सशक्त किया है। यह भारत की **व्यापारिक रणनीति** को बढ़ावा देने के लिए है, खासकर **पूर्वी एशिया** और **दक्षिण-पूर्व एशिया** में।

---

3. जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय नीति (Climate Change and Environmental Policy)

जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकट ने भारत को अपनी **विदेश नीति** में **पर्यावरणीय मुद्दों** को प्राथमिकता देने पर मजबूर किया है। **पेरिस जलवायु समझौते** में भारत की भूमिका को बढ़ावा देने और **नवीकरणीय ऊर्जा** को अपनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं।

भारत की पर्यावरणीय प्रतिबद्धताएँ:

* भारत ने **पेरिस जलवायु समझौते** के तहत **ग्लोबल वार्मिंग** को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के अपने उद्देश्य को सामने रखा है। इसके

साथ ही भारत ने **सौर ऊर्जा** और **पवन ऊर्जा** के क्षेत्र में अपनी भूमिका बढ़ाई है।

* भारत की विदेश नीति में अब **पर्यावरणीय संकट** और **जलवायु परिवर्तन** को लेकर वैश्विक मंचों पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है, जिससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग बढ़ रहा है।

---

4. अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और कूटनीति (International Organizations and Diplomacy)

भारत की विदेश नीति में **अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं** और **ग्लोबल गवर्नेंस** पर भी ध्यान दिया गया है। भारत ने **संयुक्त राष्ट्र**, **विश्व व्यापार संगठन (WTO)**, **अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA)**, और **ग्लोबल क्लाइमेट चेंज** जैसे मुद्दों पर वैश्विक मंचों पर अपनी स्थिति मजबूत की है।

संयुक्त राष्ट्र में भारत की भूमिका:

* भारत ने **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद** (UNSC) में **स्थायी सदस्यता** के लिए अभियान चलाया है। यह भारत की **वैश्विक शक्ति** के रूप में उभरने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

भारत और BRICS:

* **BRICS (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका)** जैसे देशों के समूह में भारत की **रणनीतिक भागीदारी** ने उसे **वैश्विक मंच पर एक प्रमुख आवाज** दी है, खासकर विकासशील देशों के दृष्टिकोण को सामने लाने के लिए।

---

5. सुरक्षा और मानवाधिकार (Security and Human Rights)

मानवाधिकार और **सुरक्षा** के मुद्दे भारतीय विदेश नीति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। भारत ने **संयुक्त राष्ट्र** और अन्य अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर मानवाधिकारों की रक्षा के लिए अपना समर्थन दिया है, और **आतंकवाद** जैसे वैश्विक संकटों से निपटने के लिए भी कई कदम उठाए हैं।

भारत और आतंकवाद:

* भारत ने **सीमा पार आतंकवाद** के खिलाफ अपनी विदेश नीति को कड़ा किया है। **पाकिस्तान** और अन्य देशों द्वारा आतंकवादियों का समर्थन किए जाने के विरोध में भारत ने **सार्वभौमिक** और **कूटनीतिक दबाव** बढ़ाया है।

मानवाधिकार नीति:

* भारत ने **मानवाधिकार** से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय समझौतों और कूटनीतियों का समर्थन किया है, जैसे **संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद**। हालांकि, भारत का **आंतरिक मुद्दों** के संदर्भ में यह नीति कभी-कभी **विरोधाभास** उत्पन्न करती है, विशेष रूप से **कश्मीर** और **नागरिक स्वतंत्रताओं** से जुड़े सवालों पर।

निष्कर्ष (Conclusion)

बदलते अंतर्राष्ट्रीय वातावरण ने भारत की **विदेश नीति** को एक नई दिशा दी है। **सामरिक साझेदारी**, **आर्थिक कूटनीति**, **पर्यावरणीय जिम्मेदारी**, और **मानवाधिकार** जैसे मुद्दों पर भारत ने अपनी भूमिका को

सशक्त किया है। भारत को आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी विदेश नीति में **नए दृष्टिकोण** और **सांस्कृतिक समझ** को बढ़ावा देना होगा, ताकि वह **वैश्विक कूटनीति** में अपनी उपस्थिति को मजबूत कर सके।

भारत की विदेश नीति में इन परिवर्तनों ने उसे **वैश्विक स्तर पर एक प्रभावी शक्ति** के रूप में उभरने का अवसर दिया है, लेकिन इसके साथ ही भारत को **आंतरिक और बाहरी चुनौतियों** से भी निपटना होगा।

भारतीय विदेश नीति: उपलब्धियाँ और चुनौतियाँ (Indian Foreign Policy: Achievements and Challenges)

भारत की **विदेश नीति** का उद्देश्य **राष्ट्रीय सुरक्षा**, **आर्थिक विकास**, **वैश्विक प्रभाव**, और **वैश्विक शांति** को सुनिश्चित करना है। स्वतंत्रता के बाद से भारत ने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए कई पहल की हैं। साथ ही, उसे कई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा है।

---

1. भारतीय विदेश नीति की प्रमुख उपलब्धियाँ (Achievements of Indian Foreign Policy)

(क) स्वतंत्र और संतुलित कूटनीति

* भारत ने स्वतंत्रता के बाद से **अधिकारों और संप्रभुता** को बनाए रखते हुए **गुटनिरपेक्ष आंदोलन (Non-Aligned Movement - NAM)** की स्थापना की।
* यह नीति भारत को **शीत युद्ध के दौरान** एक स्वतंत्र और निष्पक्ष कूटनीतिक दृष्टिकोण रखने में मदद करती रही।

(ख) सुरक्षा और सामरिक उपलब्धियाँ

* भारत ने **पाकिस्तान** और **चीन** जैसी शक्तियों के साथ होने वाले संघर्षों में अपनी **राष्ट्रीय सुरक्षा** सुनिश्चित की।
* 1971 का **भारत-पाकिस्तान युद्ध** और उसके परिणामस्वरूप **बांग्लादेश की स्वतंत्रता** भारतीय विदेश नीति की बड़ी सफलता मानी जाती है।
* भारत की **परमाणु शक्ति** (1974 का पोखरण-I और 1998 का पोखरण-II परीक्षण) ने उसे एक **वैश्विक रणनीतिक शक्ति** के रूप में स्थापित किया।

(ग) आर्थिक और व्यापारिक कूटनीति

* भारत ने वैश्विक मंच पर **WTO**, **BRICS**, **G20**, और **ASEAN** जैसी संस्थाओं में अपनी भूमिका सशक्त की।

* भारत ने **व्यापार समझौते** और **विदेशी निवेश** को बढ़ावा देने के लिए कई आर्थिक पहल की, जैसे **मेक इन इंडिया** और **आत्मनिर्भर भारत**।

(घ) वैश्विक मान्यता और शांति प्रयास

* भारत ने **संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों** में सक्रिय भागीदारी की।

* भारत की कूटनीति ने **विश्व शांति और मानवीय सहायता** के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय मान्यता दिलाई, जैसे **कोविड-19 महामारी** में भारत द्वारा दवाई और टीके की आपूर्ति।

(ङ) क्षेत्रीय नेतृत्व और सहयोग

* भारत ने **दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC)**, **बांग्लादेश**, **नेपाल**, **श्रीलंका**, और **भूटान** जैसे पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को मजबूत किया।

* भारत ने **क्वाड (Quad)** और **ब्रिक्स** जैसे वैश्विक समूहों में अपनी सक्रिय भागीदारी दिखाई।

---

2. भारतीय विदेश नीति की प्रमुख चुनौतियाँ (Challenges of Indian Foreign Policy)

(क) सीमा और सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ

* भारत को **चीन** और **पाकिस्तान** के साथ सीमा विवादों और आतंकवाद जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।
* **लद्दाख** और **अक्साई चिन** में चीन के साथ बढ़ता तनाव, तथा **जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी हमले**, भारत के लिए प्रमुख सुरक्षा खतरे हैं।

(ख) पड़ोसी देशों के साथ तनाव

* **नेपाल**, **श्रीलंका**, और **बांग्लादेश** के साथ कभी-कभी **सीमा विवाद** और **जल संसाधन** को लेकर मतभेद उत्पन्न होते हैं।
* पड़ोसी देशों में राजनीतिक अस्थिरता और अंतरराष्ट्रीय दबाव भारत के कूटनीतिक प्रयासों के लिए चुनौतीपूर्ण हैं।

(ग) वैश्विक आर्थिक दबाव

* व्यापार घाटा, निवेश की प्रतिस्पर्धा, और वैश्विक आर्थिक मंदी जैसे कारक भारत के आर्थिक कूटनीति प्रयासों को प्रभावित करते हैं।

* **व्यापार युद्ध**, **संसाधन असमानता**, और वैश्विक ऊर्जा संकट भारत की विदेश नीति में चुनौती बने हुए हैं।

(घ) पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन

* जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाएँ वैश्विक मंच पर भारत के लिए नई चुनौतियाँ हैं।

* भारत को अपनी **आर्थिक वृद्धि** और **पर्यावरणीय संरक्षण** के बीच संतुलन बनाए रखना कठिन होता जा रहा है।

(ङ) वैश्विक स्वास्थ्य और महामारी

* **कोविड-19 महामारी** ने भारत की विदेश नीति को प्रभावित किया।

* टीके और स्वास्थ्य संसाधनों की वैश्विक कमी, और वैश्विक स्वास्थ्य असमानता भारत के लिए एक नई चुनौती बनी।

(च) वैश्विक शक्ति संघर्ष

* **अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा**, **रूस-यूक्रेन युद्ध**, और मध्य-पूर्व में अस्थिरता जैसी घटनाएँ भारत की विदेश नीति को प्रभावित करती हैं।

* भारत को वैश्विक शक्ति संघर्ष और कूटनीतिक दबाव के बीच **संतुलित नीति** अपनानी होती है।

---

3. निष्कर्ष (Conclusion)

भारत की विदेश नीति ने **राष्ट्रीय सुरक्षा**, **वैश्विक मान्यता**, और **आर्थिक विकास** में कई उपलब्धियाँ हासिल की हैं।

साथ ही, इसे **सीमा विवाद**, **आर्थिक और पर्यावरणीय दबाव**, **वैश्विक स्वास्थ्य संकट**, और **शक्ति संघर्ष** जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

भविष्य में भारत की विदेश नीति की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वह **सुरक्षा, आर्थिक विकास, और कूटनीति** में संतुलन बनाए रखते हुए

वैश्विक और क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुसार अपने दृष्टिकोण को निरंतर समायोजित करता रहे।

भारतीय महासागर क्षेत्रीय सहयोग और शांति क्षेत्र (Indian Ocean Regional Cooperation and Zone of Peace) – हिंदी में

भारतीय महासागर (Indian Ocean), भूगोलिक और रणनीतिक दृष्टि से विश्व के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री क्षेत्रों में से एक है। यह क्षेत्र न केवल समुद्री व्यापार और ऊर्जा परिवहन का केंद्र है, बल्कि वैश्विक सुरक्षा और कूटनीति के लिए भी महत्वपूर्ण है। भारत की विदेश नीति में **भारतीय महासागर क्षेत्रीय सहयोग (IOR Cooperation)** और **शांति क्षेत्र (Zone of Peace)** की अवधारणा का विशेष महत्व है।

---

1. भारतीय महासागर क्षेत्र की रणनीतिक महत्ता (Strategic Importance of Indian Ocean Region)

* भारतीय महासागर **भारत, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, और दक्षिण एशियाई देशों** को जोड़ता है।
* यह क्षेत्र **विश्व व्यापार का मुख्य मार्ग** है, जिसमें तेल, गैस और अन्य आवश्यक वस्तुओं का परिवहन होता है।

* सुरक्षा दृष्टि से यह क्षेत्र **आतंकवाद, समुद्री डकैती, और क्षेत्रीय संघर्ष** के लिए संवेदनशील है।

* भारत के लिए यह क्षेत्र **राष्ट्रीय सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा और वैश्विक रणनीति** में महत्वपूर्ण है।

---

2. भारतीय महासागर क्षेत्रीय सहयोग (Indian Ocean Regional Cooperation – IORC)

भारत ने अपनी विदेश नीति में **भारतीय महासागर क्षेत्र** के देशों के साथ **सहयोग और सहयोगात्मक पहल** को बढ़ावा दिया है। इसका उद्देश्य **सुरक्षा, आर्थिक विकास, और सामरिक साझेदारी** को मजबूत करना है।

मुख्य पहलें और संगठन:

1. **इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (IORA)**

   * भारत ने 1997 में **IORA** का गठन किया, जिसमें भारतीय महासागर क्षेत्र के 20 से अधिक देश शामिल हैं।

* उद्देश्य:

  * आर्थिक विकास और व्यापार को बढ़ावा देना
  * समुद्री सुरक्षा और आतंकवाद से निपटना
  * पर्यटन, ऊर्जा, और विज्ञान में सहयोग

2. **सामरिक और रक्षा सहयोग**

* भारत ने भारतीय महासागर में **सामरिक भागीदारी** बढ़ाने के लिए नौसैनिक अभ्यास आयोजित किए हैं।
* देशों के साथ **पोर्ट शेयरिंग**, **सामुद्रिक सुरक्षा समझौते**, और **सांस्कृतिक एवं आर्थिक सहयोग** को बढ़ावा दिया गया है।

3. **आर्थिक सहयोग**

* **भारतीय निवेश और व्यापार** को क्षेत्रीय देशों के साथ बढ़ावा देने के लिए संयुक्त परियोजनाएँ और व्यापार समझौते किए गए।

---

3. शांति क्षेत्र (Zone of Peace) की अवधारणा

शांति क्षेत्र (Zone of Peace) की अवधारणा भारत ने 1971 में संयुक्त राष्ट्र में प्रस्तुत की थी। इसका उद्देश्य **भारतीय महासागर को संघर्ष और सैन्य शक्ति के प्रयोग से मुक्त करना** था।

मुख्य बिंदु:

* भारतीय महासागर को **सैन्य शक्ति और परमाणु हथियारों से मुक्त क्षेत्र** बनाने का प्रस्ताव।
* सभी देश इस क्षेत्र में **शांति, सहयोग, और समुद्री सुरक्षा** बनाए रखें।
* क्षेत्रीय देशों के बीच **राजनीतिक तनाव और सैन्य संघर्ष** को कम करना।

भारत का दृष्टिकोण:

* भारत ने भारतीय महासागर क्षेत्र को **शांति और विकास का क्षेत्र** बनाने का प्रयास किया।
* यह पहल वैश्विक शक्ति संघर्ष और सैन्य हस्तक्षेप को कम करने के लिए थी।

---

4. भारतीय विदेश नीति पर प्रभाव (Impact on Indian Foreign Policy)

1. **सामरिक महत्व में वृद्धि**

   * भारतीय महासागर में भारत की नौसैनिक उपस्थिति और सामरिक भागीदारी बढ़ी।
   * भारत ने **सुरक्षा और रणनीतिक नियंत्रण** बनाए रखने के लिए विभिन्न देशों के साथ साझेदारी की।

2. **आर्थिक और व्यापारिक लाभ**

   * क्षेत्रीय सहयोग के कारण **नौवहन, ऊर्जा, और व्यापारिक सुरक्षा** में सुधार हुआ।
   * भारत ने क्षेत्रीय देशों के साथ **व्यापार और निवेश परियोजनाएँ** बढ़ाईं।

3. **वैश्विक कूटनीति में प्रभाव**

   * भारत ने भारतीय महासागर को **शांति और विकास का केंद्र** बनाने के प्रयासों से अपनी **वैश्विक छवि** को मजबूत किया।

   * IORA और Zone of Peace पहल ने भारत को **क्षेत्रीय नेतृत्व** प्रदान किया।

4. **चुनौतियाँ**

   * चीन और अन्य वैश्विक शक्तियों का भारतीय महासागर में बढ़ता प्रभाव।
   * समुद्री डकैती, आतंकवाद, और सीमा विवाद जैसी चुनौतियाँ।
   * क्षेत्रीय देशों के बीच राजनीतिक मतभेद और अस्थिरता।

---

5. निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय महासागर क्षेत्र में **सहयोग और शांति क्षेत्र की अवधारणा** भारत की विदेश नीति का एक प्रमुख स्तंभ है।

* इस नीति ने भारत को **क्षेत्रीय नेतृत्व**, **सुरक्षा रणनीति**, और **आर्थिक लाभ** प्रदान किया।
* हालांकि, क्षेत्र में बढ़ती वैश्विक प्रतिस्पर्धा और सुरक्षा खतरे इसे चुनौतीपूर्ण भी बनाते हैं।

* भविष्य में भारत को **साझा सुरक्षा उपाय**, **आर्थिक सहयोग**, और **वैश्विक शांति** सुनिश्चित करने के लिए अपनी कूटनीति को लगातार मजबूत करना होगा।

UNIT-4

भारत-पाकिस्तान संबंध: नीति और प्रदर्शन (Indian-Pakistan Relations: Policy and Performance)

भारत और पाकिस्तान के बीच संबंधों को समझने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम उनकी **नीतियों**, **कूटनीतिक प्रयासों**, और **द्विपक्षीय मामलों** पर ध्यान दें। दोनों देशों की **संप्रभुता**, **सुरक्षा** और **आतंकवाद** जैसे मुद्दों पर दृष्टिकोण भिन्न हैं, जो उनके संबंधों को प्रभावित करते हैं।

भारत और पाकिस्तान के रिश्ते का इतिहास **विभाजन**, **युद्ध**, **संघर्ष** और **कूटनीतिक प्रयासों** से भरा हुआ है। इन संबंधों का मूल्यांकन करने के लिए हमें उनकी **नीतियों** और **प्रदर्शन** को समझना होगा।

---

1. भारत-पाकिस्तान संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Background of India-Pakistan Relations)

भारत और पाकिस्तान के संबंधों में कई महत्वपूर्ण घटनाएँ हुई हैं, जो उनके रिश्तों को आकार देती हैं:

* **1947 का विभाजन**: भारत और पाकिस्तान का विभाजन और पाकिस्तान का निर्माण दोनों देशों के बीच तनाव और संघर्ष की शुरुआत थी।

* **कश्मीर मुद्दा**: कश्मीर के विशेष दर्जे और पाकिस्तान द्वारा उस पर दावा किए जाने के कारण दोनों देशों के रिश्तों में हमेशा तनाव रहा है।

* **1965 और 1971 का युद्ध**: 1965 में भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध हुआ, जबकि 1971 का युद्ध पाकिस्तान के विभाजन और बांग्लादेश की स्वतंत्रता का कारण बना।

---

2. भारत की विदेश नीति और पाकिस्तान के प्रति दृष्टिकोण (India's Foreign Policy and Approach towards Pakistan)

भारत की विदेश नीति में पाकिस्तान के साथ संबंधों को लेकर कई महत्वपूर्ण पहलू रहे हैं:

(क) द्विपक्षीय संवाद और शांति प्रयास:

* **नेहरू-आयुब समझौता (1960)**: भारत और पाकिस्तान ने **इंदस जल समझौता (Indus Water Treaty)** पर हस्ताक्षर किए, जो जल संसाधनों के विवाद को हल करने का प्रयास था।

* **अटल बिहारी वाजपेयी का लाहौर यात्रा (1999)**: भारत के प्रधानमंत्री **अटल बिहारी वाजपेयी** ने लाहौर यात्रा की, जिससे शांति के प्रयासों को बल मिला, लेकिन **कारगिल युद्ध** (1999) के कारण यह प्रयास विफल हो गया।

* **उधार की शांति**: भारत ने कई बार पाकिस्तान से शांति की अपील की है, लेकिन **आतंकवाद**, **कश्मीर मुद्दा**, और **पाकिस्तान के साथ सीमा विवाद** की वजह से शांति प्रयासों में निरंतर विघ्न उत्पन्न हुए हैं।

(ख) आतंकवाद और कूटनीति:

* भारत ने कई बार पाकिस्तान पर **आतंकवाद का समर्थन** करने का आरोप लगाया है। **मुंबई हमले (2008)** और **उरी हमले (2016)** जैसी घटनाएँ भारत-पाकिस्तान के रिश्तों में तनाव का कारण बनीं।

* भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पाकिस्तान को **आतंकवाद को बढ़ावा देने वाला देश** बताकर इसका विरोध किया।

(ग) कश्मीर मुद्दा:

* कश्मीर को लेकर दोनों देशों के बीच स्थायी विवाद रहा है। पाकिस्तान **कश्मीर के स्वतंत्रता** के लिए संघर्ष करता रहा है, जबकि भारत इसे **आंतरिक मुद्दा** मानता है।

* **धारा 370** के रद्द होने के बाद पाकिस्तान ने **भारत के खिलाफ वैश्विक स्तर पर विरोध** किया, लेकिन भारत ने इसे **अपने आंतरिक मुद्दे** के रूप में प्रस्तुत किया।

---

3. पाकिस्तान की विदेश नीति और भारत के प्रति दृष्टिकोण (Pakistan's Foreign Policy and Approach towards India)

पाकिस्तान की विदेश नीति हमेशा से **भारत के प्रति प्रतिद्वंद्विता और सुरक्षा** पर आधारित रही है। इसके प्रमुख पहलू निम्नलिखित हैं:

(क) सुरक्षा और कश्मीर:

* पाकिस्तान के लिए **कश्मीर** का मुद्दा **राष्ट्रीय सुरक्षा** और **संप्रभुता** का प्रतीक बन चुका है। कश्मीर में अपनी उपस्थिति बनाए रखने

के लिए पाकिस्तान कई बार युद्धों में उलझ चुका है और अब **आतंकवाद** के रूप में इस संघर्ष को जारी रखे हुए है।

* पाकिस्तान ने **संयुक्त राष्ट्र** और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर **कश्मीर का अंतरराष्ट्रीयकरण** करने का प्रयास किया है।

(ख) आतंकवाद और अंतरराष्ट्रीय सहयोग:

* पाकिस्तान ने **लश्कर-ए-तैयबा**, **जमैात-उद-दावा**, और **हक्कानी नेटवर्क** जैसे आतंकवादी समूहों को **समर्थन** दिया है, जिससे भारत के साथ तनाव और बढ़ा है।

* पाकिस्तान की विदेश नीति में भारत के खिलाफ **सैन्य गठबंधन** और **आतंकवाद के माध्यम से अस्थिरता फैलाने** के प्रयास हैं। हालांकि, वैश्विक दबाव और अमेरिकी सहयोग के कारण पाकिस्तान ने **आतंकवाद** के खिलाफ कुछ कदम उठाए हैं।

---

4. भारत-पाकिस्तान रिश्तों की चुनौतियाँ (Challenges in India-Pakistan Relations)

(क) कश्मीर विवाद:

* **कश्मीर** का मुद्दा भारत-पाकिस्तान के रिश्तों में सबसे बड़ी बाधा है। पाकिस्तान कश्मीर को **अंतरराष्ट्रीय विवाद** मानता है, जबकि भारत इसे **आंतरिक मुद्दा** मानता है।

* **धारा 370 का उन्मूलन** और **कश्मीर की विशेष स्थिति का अंत** ने पाकिस्तान को और अधिक विरोधी बना दिया और संबंधों में तनाव और बढ़ा।

(ख) आतंकवाद और सीमा संघर्ष:

* पाकिस्तान द्वारा **आतंकवाद का समर्थन** और **सीमा पर संघर्ष** के कारण दोनों देशों के बीच सैन्य तनाव बढ़ता रहता है। भारत ने **पाकिस्तान को आतंकवाद का संरक्षक** करार दिया है, जबकि पाकिस्तान इसे **आंतरिक संघर्ष** मानता है।

(ग) सीमाओं पर सैन्य संघर्ष:

* दोनों देशों के बीच **सिंधु नदी** जैसे जल विवाद, **सीमा विवाद** और **लक्षद्वीप-सीमा** जैसे मुद्दे भी गंभीर रूप से संबंधों को प्रभावित करते हैं।

* **कारगिल युद्ध (1999)**, **कछी सीमा विवाद**, और **पाकिस्तानी सेना की सीमावर्ती घुसपैठ** जैसे संघर्ष भारत और पाकिस्तान के रिश्तों में तनाव का कारण बने हैं।

(घ) अंतरराष्ट्रीय दबाव:

* अंतरराष्ट्रीय मंचों पर **भारत और पाकिस्तान के कूटनीतिक प्रयासों** में **अमेरिका**, **चीन** और **संयुक्त राष्ट्र** जैसे देशों का हस्तक्षेप बढ़ा है।
* **पाकिस्तान** पर **आतंकवादियों का समर्थन** करने और **कश्मीर का अंतरराष्ट्रीयकरण** करने का आरोप है, जिससे वैश्विक स्तर पर उसकी छवि प्रभावित हुई है।

---

5. भारत-पाकिस्तान रिश्तों में सुधार के लिए उपाय (Measures for Improving India-Pakistan Relations)

(क) द्विपक्षीय संवाद:

* दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय वार्ता और संवाद से **समझौतों** और **साझेदारी** की संभावना बढ़ सकती है।

* **कश्मीर** और **आतंकवाद** जैसे मुद्दों पर **सुरक्षा संवाद** शुरू किए जा सकते हैं।

(ख) विश्वास निर्माण और मानवता:

* **मानवीय मुद्दों** जैसे **बन्दी आदान-प्रदान**, **व्यापारी मार्ग** और **दूतावासों के बीच संवाद** से विश्वास निर्माण हो सकता है।

(ग) आर्थिक सहयोग:

* **व्यापार और निवेश** के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने से दोनों देशों के लिए लाभकारी स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।
* **उर्जा, जल** और **विकास परियोजनाओं** में सहयोग से दोनों देशों के बीच संबंधों में सुधार हो सकता है।

---

6. निष्कर्ष (Conclusion)

भारत और पाकिस्तान के रिश्ते हमेशा से **तनावपूर्ण** और **जटिल** रहे हैं। **कश्मीर**, **आतंकवाद** और **सीमा विवाद** जैसे मुद्दे उनके रिश्तों को लगातार प्रभावित करते हैं। हालांकि, **संवाद**, **सुरक्षा सहयोग** और **आर्थिक साझेदारी** जैसे उपायों से दोनों देशों के बीच **संघर्ष कम करने** और **सुरक्षा में सुधार** की संभावनाएँ हैं।

भारत की विदेश नीति में पाकिस्तान के साथ **शांति, स्थिरता** और **विकास** की ओर एक कदम बढ़ाने की आवश्यकता है, लेकिन इसके लिए दोनों देशों को **आत्मनिर्भर, लोकतांत्रिक और कूटनीतिक दृष्टिकोण** अपनाना होगा।

भारत-चीन संबंध (India-China Relations)

भारत और चीन के बीच संबंधों का इतिहास अत्यंत जटिल और विविधतापूर्ण रहा है। दोनों देशों के बीच व्यापार, कूटनीति, और रणनीतिक स्थिति के मामले में कई उतार-चढ़ाव आए हैं। **भारत और चीन** दोनों ही **दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाले देश** हैं और **एशिया** की प्रमुख शक्तियाँ हैं, जो न केवल क्षेत्रीय बल्कि वैश्विक स्तर पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव डालती हैं।

भारत-चीन संबंधों को समझने के लिए हमें उनके ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक, और सैन्य पहलुओं पर विचार करना होगा।

---

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Background)

(क) सीमा विवाद (Border Dispute)

भारत और चीन के बीच सीमा विवाद हमेशा से एक बड़ा मुद्दा रहा है।

* **1962 का भारत-चीन युद्ध**: यह युद्ध **अरुणाचल प्रदेश** (जो चीन **तिब्बत का हिस्सा** मानता है) और **लद्दाख** के क्षेत्र पर हुआ था। युद्ध के परिणामस्वरूप चीन ने कुछ हिस्सों पर कब्जा कर लिया, और यह विवाद अब तक चला आ रहा है।
* सीमा पर तनाव के कारण दोनों देशों के रिश्तों में ठहराव और टकराव होते रहे हैं, खासकर **लद्दाख** और **आक्साई चिन** (जो अब चीन के कब्जे में है) के मुद्दे पर।

(ख) तिब्बत का मुद्दा (Tibet Issue)

चीन ने **तिब्बत** को 1950 में अपने नियंत्रण में लिया। भारत ने **दलाई लामा** को 1959 में तिब्बत में चीनी शासन से बचने के लिए शरण दी थी। यह

कदम भारत-चीन के रिश्तों में तनाव का कारण बना, क्योंकि चीन ने इसे अपनी **संप्रभुता का उल्लंघन** माना।

---

2. भारत-चीन संबंधों की वर्तमान स्थिति (Current State of India-China Relations)

(क) सीमा विवाद और सैन्य तनाव (Border Disputes and Military Tensions)

* **गालवान घाटी संघर्ष (2020)**: हाल ही में, **2020 में गालवान घाटी** में भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच संघर्ष हुआ, जिसमें दोनों पक्षों के सैनिक मारे गए। यह भारत-चीन संबंधों में एक नया मोड़ था, जिसने दोनों देशों के रिश्तों को और जटिल बना दिया।
* **पूर्वी लद्दाख** और **सिक्किम सीमा** पर नियमित सैन्य गतिविधियाँ दोनों देशों के बीच तनाव को बढ़ाती रहती हैं।

(ख) कूटनीतिक प्रयास (Diplomatic Efforts)

* **डोकलाम संकट (2017)**: चीन और भारत के बीच **डोकलाम** (भारत, भूटान और चीन की सीमा पर स्थित क्षेत्र) में सैन्य तनाव उत्पन्न हुआ था, जहां चीन ने एक सड़क निर्माण शुरू किया था। इस संकट के समाधान के लिए कूटनीतिक प्रयास किए गए, और अंततः दोनों देशों ने स्थिति को स्थिर किया।
* **सीमा वार्ता (Border Talks)**: सीमा विवादों को हल करने के लिए दोनों देशों के बीच नियमित रूप से **सैन्य और कूटनीतिक वार्ता** आयोजित होती है।

---

3. व्यापार और आर्थिक संबंध (Trade and Economic Relations)

भारत और चीन के बीच आर्थिक संबंध लगातार बढ़े हैं, हालांकि सीमा विवादों के कारण कभी-कभी ये संबंध तनावपूर्ण होते हैं।

* **व्यापार वृद्धि**: 2000 के बाद से, भारत और चीन के बीच व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। चीन भारत का **वह सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार** है, और दोनों देशों के बीच व्यापार की मात्रा **100 अरब डॉलर** के पार पहुँच चुकी है।
* **व्यापार असंतुलन**: हालांकि, भारत और चीन के बीच व्यापार बहुत बढ़ा है, लेकिन **व्यापार असंतुलन** (Trade Deficit) भारत के लिए चिंता का

विषय बना हुआ है। भारत का चीन के साथ व्यापार घाटा **50 अरब डॉलर** से अधिक है, जो भारत के लिए आर्थिक चुनौती है।

(क) चीन से आयात:

भारत मुख्य रूप से **इलेक्ट्रॉनिक्स**, **कच्चे माल**, और **रासायनिक उत्पादों** का आयात करता है।

(ख) भारत का निर्यात:

भारत मुख्य रूप से **औषधि**, **सूती वस्त्र**, **रासायनिक उत्पाद** और **खनिज** चीन को निर्यात करता है।

---

4. रणनीतिक और सामरिक संबंध (Strategic and Security Relations)

(क) ब्रिक्स (BRICS)

भारत और चीन **ब्रिक्स** (Brazil, Russia, India, China, South Africa) जैसे **आर्थिक समूह** का हिस्सा हैं। दोनों देशों ने इस मंच का उपयोग **आर्थिक सहयोग** और **वैश्विक शासन** पर अपने दृष्टिकोण साझा करने के लिए किया है।

* हालांकि, भारत और चीन के बीच कभी-कभी इस मंच पर मतभेद भी होते हैं, विशेषकर **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद** में भारत की स्थायी सदस्यता पर चीन के विरोध को लेकर।

(ख) चीन की "बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव" (Belt and Road Initiative - BRI)

चीन ने अपनी **बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव** (BRI) के तहत **एशिया, यूरोप, और अफ्रीका** में विशाल बुनियादी ढांचा परियोजनाएँ शुरू की हैं। भारत ने इस परियोजना का विरोध किया है, विशेष रूप से **सीपेक (CPEC)** परियोजना को लेकर, जो **पाकिस्तान-चीन आर्थिक गलियारा** है, क्योंकि यह **कश्मीर** के विवादित क्षेत्र से गुजरता है।

---

5. कूटनीतिक चुनौतियाँ और विवाद (Diplomatic Challenges and Disputes)

(क) दक्षिणी एशिया में चीन की गतिविधियाँ (China's Activities in South Asia)

चीन ने पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, और बांग्लादेश जैसे देशों में अपने **आर्थिक और सैन्य प्रभाव** को बढ़ाया है। इससे भारत चिंतित है क्योंकि **चीन का बढ़ता प्रभाव** उसके **दक्षिण एशिया** में रणनीतिक हितों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

(ख) भारत और चीन के बीच बहुपक्षीय विवाद

* **सार्क (SAARC)** और **ASEAN** जैसे क्षेत्रीय संगठनों में चीन की बढ़ती भूमिका भारत के लिए एक चुनौती बन सकती है, क्योंकि ये संगठन दक्षिण एशियाई देशों के लिए महत्वपूर्ण हैं।
* भारत ने **क्वाड** (QUAD) जैसी संरचनाओं के माध्यम से **चीन के प्रभाव** का मुकाबला करने के प्रयास किए हैं, जिसमें **अमेरिका**, **जापान**, और **ऑस्ट्रेलिया** जैसे देशों को शामिल किया गया है।

---

6. भविष्य के लिए दृष्टिकोण (Future Prospects)

भारत-चीन संबंधों का भविष्य एक जटिल कूटनीतिक ढांचे पर निर्भर करेगा, जिसमें दोनों देशों के बीच **सुरक्षा**, **आर्थिक सहयोग**, और **संप्रभुता** से संबंधित मुद्दों का समाधान निकाला जाएगा।

(क) द्विपक्षीय संबंधों में सुधार के अवसर

* **संवाद और वार्ता** के माध्यम से सीमा विवादों का समाधान और **सैन्य तनाव** को कम करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं।
* दोनों देशों को **आर्थिक सहयोग** और **व्यापार** में संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता है।

(ख) वैश्विक कूटनीति में योगदान

भारत और चीन दोनों **संयुक्त राष्ट्र**, **BRICS**, और **G20** जैसे मंचों पर वैश्विक सहयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। **जलवायु परिवर्तन** और **वैश्विक सुरक्षा** जैसे मुद्दों पर सहयोग से दोनों देशों के संबंधों में सुधार हो सकता है।

---

7. निष्कर्ष (Conclusion)

भारत और चीन के संबंध हमेशा से **विकसित होते** और **जटिल** रहे हैं। **सीमा विवाद**, **सामरिक प्रतिस्पर्धा**, और **आतंकवाद** जैसे मुद्दे दोनों देशों के रिश्तों में कठिनाइयाँ पैदा करते हैं, लेकिन **व्यापार**, **आर्थिक सहयोग**, और **द्विपक्षीय संवाद** के माध्यम से इन समस्याओं का समाधान संभव है।

भविष्य में, भारत और चीन को अपने **वैश्विक और क्षेत्रीय हितों** के लिए **समान दृष्टिकोण** अपनाने की आवश्यकता होगी, ताकि वे एक-दूसरे के साथ **शांति, समृद्धि**, और **सुरक्षा** की दिशा में आगे बढ़ सकें।

नीति और प्रदर्शन (Policy and Performance)

नीति और **प्रदर्शन** शब्दों का उपयोग विभिन्न संदर्भों में किया जाता है, विशेषकर जब हम **राजनीति**, **व्यवस्था**, **प्रशासन**, और **आर्थिक विकास** जैसी बातों की चर्चा करते हैं। नीति (Policy) एक **दृष्टिकोण**, **रणनीति**, या **योजना** होती है, जिसे किसी सरकार, संगठन, या अन्य संस्था द्वारा तय किया जाता है, जबकि प्रदर्शन

(Performance) उस नीति के **कार्यान्वयन** और **परिणाम** को दर्शाता है। आइए इन्हें विस्तार से समझते हैं।

---

1. नीति (Policy)

नीति किसी विशेष लक्ष्य या उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए एक स्पष्ट रूपरेखा होती है। यह **निर्णय**, **कार्ययोजना**, और **रणनीति** को निर्धारित करती है, जिनके द्वारा किसी विशेष दिशा में काम किया जाता है। नीति का उद्देश्य आमतौर पर **समाज के समग्र कल्याण**, **आर्थिक प्रगति**, **राष्ट्रीय सुरक्षा**, और **वैश्विक स्थिति** में सुधार करना होता है।

नीति के कुछ प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं:

(क) सरकारी नीति (Government Policy)

* यह नीति किसी सरकार द्वारा बनाई जाती है, और इसका उद्देश्य समाज के विभिन्न वर्गों के लिए कल्याणकारी योजनाओं का निर्माण करना होता है।

उदाहरण के लिए, **शिक्षा नीति**, **स्वास्थ्य नीति**, और **आर्थिक नीति**।

(ख) आर्थिक नीति (Economic Policy)

* इस प्रकार की नीति देश की **आर्थिक संरचना** को सुधारने और विकास को बढ़ावा देने के लिए बनाई जाती है। इसमें **निवेश आकर्षित करने**, **विकास दर को बढ़ाने**, और **विकासशील क्षेत्रों** के लिए योजनाएं शामिल होती हैं।

(ग) विदेशी नीति (Foreign Policy)

* **भारत की विदेश नीति** या **चीन की विदेश नीति** जैसे उदाहरण हैं, जो किसी देश के **अंतरराष्ट्रीय रिश्ते**, **द्विपक्षीय समझौतों**, और **वैश्विक रणनीति** को नियंत्रित करती हैं।

(घ) सामाजिक नीति (Social Policy)

* यह नीति समाज के विभिन्न तबकों के लिए बनाई जाती है, जैसे **गरीबों के लिए कल्याणकारी योजनाएं**, **महिलाओं और बच्चों के अधिकार**, **समाज की समग्र भलाई** इत्यादि।

---

2. प्रदर्शन (Performance)

प्रदर्शन नीति के **कार्यान्वयन** और उसके **परिणामों** को मापने का एक तरीका होता है। यह दिखाता है कि किसी नीति ने किस हद तक अपने निर्धारित लक्ष्य को हासिल किया। नीति का प्रभावी या अक्षम प्रदर्शन नीति बनाने के तरीके, संसाधनों की उपलब्धता, और उस नीति को लागू करने वाली संस्थाओं की क्षमता पर निर्भर करता है।

(क) नीति का मूल्यांकन (Policy Evaluation)

नीति के प्रदर्शन का मूल्यांकन करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे यह पता चलता है कि नीति ने अपेक्षित परिणाम दिए या नहीं। इसके अंतर्गत निम्नलिखित पहलुओं पर ध्यान दिया जाता है:

* **लक्ष्य की प्राप्ति**: क्या नीति ने अपने निर्धारित उद्देश्य पूरे किए?
* **प्रभावशीलता**: नीति का कार्यान्वयन कितना प्रभावी रहा?

* **समय और लागत**: क्या नीति ने अपने लक्ष्यों को निर्धारित समय में प्राप्त किया और क्या यह लागत प्रभावी थी?

* **समाज पर प्रभाव**: नीति का समाज और जनता पर क्या सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव पड़ा?

(ख) प्रदर्शन के प्रकार (Types of Performance)

प्रदर्शन को **विभिन्न दृष्टिकोणों** से मापा जा सकता है:

1. **आर्थिक प्रदर्शन**:

   * जैसे **विकास दर**, **नौकरी निर्माण**, **मूल्य स्थिरता**, और **निर्यात वृद्धि**।

2. **सामाजिक प्रदर्शन**:

   * **स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार**, **शिक्षा के स्तर में सुधार**, **गरीबी में कमी** आदि।

3. **राजनीतिक प्रदर्शन**:

   * नीति का **लोकप्रियता**, **सार्वजनिक राय**, और **राजनीतिक स्थिरता** पर प्रभाव।

---

3. नीति और प्रदर्शन का संबंध (Relationship between Policy and Performance)

नीति और प्रदर्शन के बीच सीधा संबंध होता है। यदि कोई नीति अच्छी तरह से तैयार की जाती है, सही संसाधनों का उपयोग किया जाता है, और इसे ठीक से लागू किया जाता है, तो उसका प्रदर्शन सकारात्मक होता है। इसके विपरीत, यदि नीति सही तरीके से लागू नहीं होती या उसमें बुरे निर्णय लिए जाते हैं, तो उसका प्रदर्शन प्रभावित हो सकता है।

नीति का सही डिजाइन और कार्यान्वयन:

* **नीति का डिज़ाइन**: नीति को बनाने से पहले यह समझना जरूरी होता है कि समस्या क्या है, और नीति का उद्देश्य क्या है। जैसे अगर सरकार **नौकरी बढ़ाने** की नीति बनाती है, तो यह आवश्यक है कि रोजगार सृजन के सही तरीके निर्धारित किए जाएं।

* **कार्यक्रम का कार्यान्वयन**: नीति को लागू करने के लिए सक्षम अधिकारियों, संसाधनों और योजनाओं की आवश्यकता होती है। यदि नीति के तहत कार्यक्रमों को सही तरीके से लागू किया जाता है, तो उसका प्रदर्शन बेहतर होगा।

---

4. नीति और प्रदर्शन का मूल्यांकन (Evaluation of Policy and Performance)

नीति का प्रदर्शन समय के साथ मापा जाता है, और इससे नीति में सुधार की आवश्यकता हो सकती है। यदि कोई नीति अपेक्षित परिणाम नहीं देती, तो उसका पुनर्मूल्यांकन किया जाता है और उसमें सुधार की कोशिश की जाती है। यह महत्वपूर्ण होता है कि सरकार या अन्य संस्थाएँ अपनी नीतियों का मूल्यांकन करें और **आवश्यक सुधार** करें ताकि उनके प्रदर्शन में सुधार हो सके।

उदाहरण:

* **भारत की शिक्षा नीति** को लेकर कई बार समीक्षा की गई है, क्योंकि शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता महसूस की गई थी। इसके बाद **नीति में बदलाव** किए गए, जैसे **आधुनिक शिक्षा तकनीकों का उपयोग** और **नौकरी केंद्रित पाठ्यक्रम** का प्रस्ताव। इस तरह के सुधार नीति के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए जरूरी होते हैं।

---

5. निष्कर्ष (Conclusion)

नीति और प्रदर्शन के बीच एक गहरा संबंध होता है। नीति को प्रभावी तरीके से लागू किया जाए, तो उसके परिणाम सकारात्मक होते हैं और प्रदर्शन बेहतर होता है। इसी तरह, यदि प्रदर्शन में कोई कमी होती है, तो नीति में सुधार की आवश्यकता होती है।

प्रदर्शन का मूल्यांकन नीति के सुधार के लिए आवश्यक होता है, और यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि नीति अपने निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त कर रही है या नहीं।

सारांश में कहा जा सकता है कि **नीति और प्रदर्शन का परस्पर संबंध** यह तय करता है कि किसी सरकार, संस्था या देश की योजनाएँ कितनी सफल हैं।

भारत की नीति: अमेरिका और रूस के प्रति दृष्टिकोण (India's Policy towards the USA and Russia)

भारत की विदेश नीति में **संयुक्त राज्य अमेरिका (USA)** और **रूस** के प्रति दृष्टिकोण ने ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान लिया है। दोनों देशों के साथ भारत के रिश्ते समय-समय पर बदलते रहे हैं, लेकिन इन संबंधों ने भारतीय कूटनीति, व्यापार, और राष्ट्रीय सुरक्षा को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है।

भारत की **अमेरिका** और **रूस** के साथ नीति का निर्धारण उसके **राष्ट्रीय हितों**, **सुरक्षा प्राथमिकताओं**, और **वैश्विक शक्ति संतुलन** को ध्यान में रखकर किया गया है। आइए, हम भारत की **अमेरिका** और **रूस** के प्रति नीति पर गहराई से विचार करें।

---

1. भारत की नीति: संयुक्त राज्य अमेरिका (India's Policy towards the USA)

भारत और अमेरिका के रिश्तों का इतिहास बहुत उतार-चढ़ाव वाला रहा है। **कोल्ड वॉर** के दौरान, भारत ने **गुटनिरपेक्ष आंदोलन** (Non-Aligned Movement) का हिस्सा होकर अमेरिका से दूरी बनाए रखी थी, जबकि

पाकिस्तान ने **अमेरिका** से सामरिक सहयोग किया था। लेकिन 1990 के दशक में दोनों देशों के रिश्तों में **नया मोड़** आया।

(क) 1990 के बाद भारत-अमेरिका संबंध

* **1991 का आर्थिक सुधार** और **सार्विक बदलती वैश्विक स्थिति** ने भारत को अमेरिका के साथ अपनी कूटनीति बदलने के लिए प्रेरित किया।
* **1998 का पोखरण परमाणु परीक्षण** और इसके बाद **अमेरिका द्वारा भारतीय परमाणु कार्यक्रम** पर प्रतिबंध लगाए गए थे, लेकिन फिर भी दोनों देशों के रिश्ते मजबूत हुए।

(ख) 2000 के दशक में रिश्तों में सुधार

* **2005 में अमेरिका-भारत परमाणु समझौता (Nuclear Deal)**: इस समझौते ने दोनों देशों के रिश्तों में एक महत्वपूर्ण बदलाव लाया। भारत को **सैन्य परमाणु ऊर्जा** कार्यक्रम के लिए अमेरिका से **प्रौद्योगिकी और सहयोग** प्राप्त हुआ।
* **व्यापारिक संबंध**: अमेरिका भारत का एक प्रमुख **व्यापारी साझीदार** बन गया। 2000 के बाद दोनों देशों के बीच व्यापार में भारी वृद्धि देखी गई।

अमेरिका भारतीय **सॉफ्टवेयर**, **आईटी सेवाएँ**, और **व्यावसायिक निवेश** का प्रमुख बाजार बन गया।

(ग) सामरिक सहयोग (Strategic Partnership)

* **आत्मनिर्भरता और क्षेत्रीय सुरक्षा**: भारत ने अमेरिका के साथ **सामरिक और रक्षा सहयोग** को बढ़ाया। अमेरिका ने भारत को **सैन्य साजो-सामान** और **सैन्य अभ्यास** में सहयोग दिया।
* **क्वाड (Quad)**: **अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और भारत** का यह मंच एक **क्षेत्रीय सुरक्षा** ढांचा प्रदान करता है, जिसका उद्देश्य **चीन** के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करना है।

(घ) वर्तमान में संबंध

* आजकल, **भारत और अमेरिका** के रिश्ते रणनीतिक, कूटनीतिक, और आर्थिक रूप से बहुत मजबूत हो गए हैं। दोनों देशों के बीच **सामरिक साझेदारी** और **अर्थव्यवस्था** के क्षेत्र में सहयोग बढ़ा है।
* हालांकि, कुछ मुद्दों पर मतभेद बने रहते हैं, जैसे **व्यापार नीतियां**, **मानवाधिकार मुद्दे**, और **अफगानिस्तान नीति**।

---

2. भारत की नीति: रूस (India's Policy towards Russia)

भारत और रूस के बीच संबंध ऐतिहासिक रूप से बहुत मजबूत और स्थिर रहे हैं। **सोवियत संघ** के साथ भारत के संबंध **शीत युद्ध** के दौरान गहरे थे और आज भी रूस के साथ भारतीय संबंधों में निरंतरता देखी जाती है।

(क) सोवियत संघ के साथ भारत का संबंध

* **सोवियत संघ और भारत** के बीच सामरिक, कूटनीतिक, और आर्थिक सहयोग मजबूत था। **भारत ने पाकिस्तान के साथ युद्धों** में **सोवियत समर्थन** प्राप्त किया था।
* **रूस का रक्षा उपकरणों का निर्यात** भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। भारत ने सोवियत संघ से **सैन्य उपकरण** और **प्रौद्योगिकी** का बड़ा हिस्सा प्राप्त किया था।

(ख) रूस के साथ भारत के रिश्तों का विकास

* **1990 के दशक में रूस का पतन** होने के बाद भी भारत और रूस के संबंधों में कोई बड़ी कमी नहीं आई। भारत ने रूस के साथ **रक्षा संबंध** बनाए रखे।

* **रूस से हथियारों और रक्षा प्रणाली का आयात**: भारत ने रूस से **सैन्य उपकरण**, **मिग विमान**, **एस-400 मिसाइल रक्षा प्रणाली** और अन्य रक्षा उपकरणों की आपूर्ति की है।

(ग) सामरिक सहयोग

* भारत और रूस के बीच **सैन्य प्रशिक्षण**, **सैन्य साझेदारी**, और **सुरक्षा सहयोग** का लंबा इतिहास रहा है। रूस भारत का एक प्रमुख **रक्षा साझीदार** है।

* दोनों देशों ने **सीमा सुरक्षा** और **आतंकवाद** के खिलाफ मिलकर काम किया है। रूस ने कई बार भारत को **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद** में स्थायी सदस्यता का समर्थन किया है।

(घ) वर्तमान में संबंध

* आज भी, रूस और भारत के बीच **रक्षा संबंध** और **ऊर्जा सहयोग** मजबूत बने हुए हैं। भारत को रूस से **प्राकृतिक गैस** और **रिफाइंड तेल** की आपूर्ति होती है।

* **चीन और पाकिस्तान के बढ़ते प्रभाव** के कारण भारत और रूस के संबंधों में कुछ **सामरिक बदलाव** आए हैं, लेकिन फिर भी दोनों देशों के बीच **विश्वसनीय मित्रता** बनी हुई है।

---

3. भारत की अमेरिका और रूस के प्रति नीति में अंतर

(क) सामरिक दृष्टिकोण

* **अमेरिका** के साथ भारत की नीति अब एक **सामरिक साझेदारी** में बदल चुकी है, जो **भारत-अमेरिका रक्षा समझौते** (Lemoa, Komcasa) और **क्वाड** जैसे मंचों के माध्यम से परिलक्षित होती है। भारत और अमेरिका की सैन्य साझेदारी बढ़ी है, लेकिन इसके साथ ही **रूस** के साथ भी भारत के सामरिक संबंध मजबूत बने हुए हैं।

(ख) व्यापार और आर्थिक सहयोग

* **अमेरिका** और भारत के बीच व्यापार संबंध मजबूत हुए हैं, जबकि **रूस** के साथ भारत का व्यापार मुख्य रूप से **रक्षा** और **ऊर्जा** के क्षेत्रों में केंद्रित है।

* **अमेरिका** भारत का एक प्रमुख **व्यापारिक साझीदार** है, जबकि **रूस** मुख्यतः **प्राकृतिक संसाधन**, **हथियारों**, और **सैन्य सहयोग** का मुख्य स्रोत है।

(ग) वैश्विक मंच पर सहयोग

* **अमेरिका** के साथ भारत का सहयोग **संयुक्त राष्ट्र**, **क्वाड**, और **विकसित देशों के समूह** में मजबूत हुआ है।

* **रूस** के साथ भारत का सहयोग **BRICS**, **संयुक्त राष्ट्र**, और **शांगहाई सहयोग संगठन (SCO)** जैसे मंचों में जारी है, जहां दोनों देशों की साझा **रणनीतिक प्राथमिकताएँ** हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

भारत की नीति **अमेरिका** और **रूस** के प्रति समय के साथ बदलती रही है, लेकिन दोनों देशों के साथ भारत के रिश्ते **कूटनीतिक संतुलन** और **राष्ट्रीय हितों** के आधार पर मजबूत बने हुए हैं।

* **अमेरिका** के साथ भारत के रिश्ते **आर्थिक** और **सामरिक** रूप से बढ़े हैं, जबकि **रूस** के साथ भारत का रिश्ता **सैन्य सहयोग** और **रक्षा साझेदारी** में मजबूत बना हुआ है।

* भारत का उद्देश्य इन दोनों देशों के साथ **संतुलित और लाभकारी रिश्ते बनाए रखना** है, ताकि वह वैश्विक मंच पर अपनी **सामरिक और आर्थिक स्थिति** को सशक्त कर सके।